सत्यमेव जयते
भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

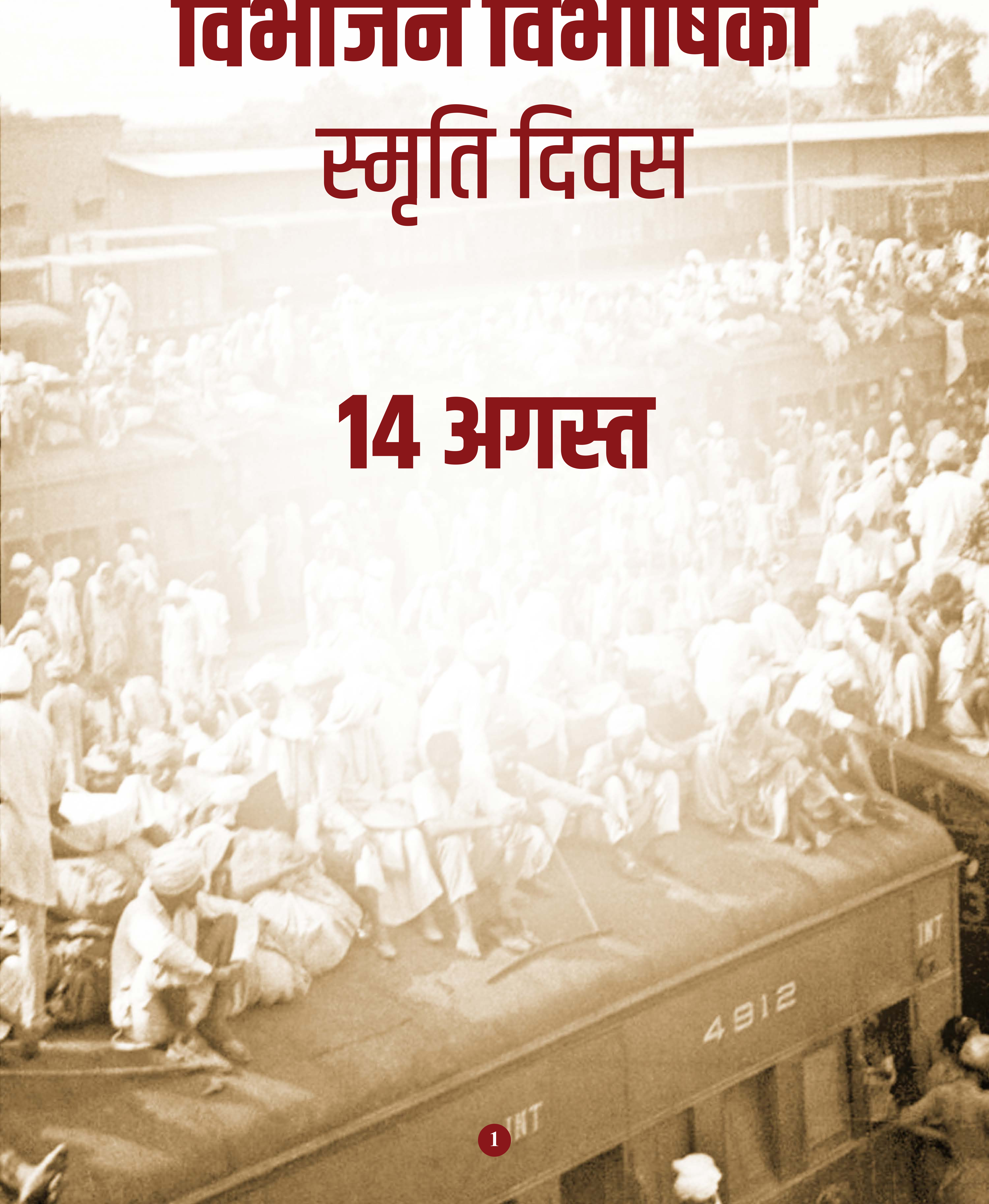

माननीय प्रधानमंत्री

श्री नरेंद्र मोदी

"देश के बंटवारे के दर्द को कभी भुलाया नहीं जा सकता। नफरत और हिंसा की वजह से हमारे लाखों बहनों और भाइयों को विस्थापित होना पड़ा और अपनी जान तक गंवानी पड़ी। उन लोगों के संघर्ष और बलिदान की याद में 14 अगस्त को **'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस'** के तौर पर मनाने का निर्णय लिया गया है।"

(माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिनांक **14 अगस्त, 2021** को किया गया ट्वीट)

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

पृष्ठभूमि

भारत का विभाजन अभूतपूर्व मानव विस्थापन और मजबूरी में पलायन की दर्दनाक कहानी है। यह एक ऐसी कहानी है, जिसमें लाखों लोग अजनबियों के बीच एकदम विपरीत वातावरण में नया आशियाना तलाश रहे थे। विश्वास और धार्मिक आधार पर एक हिंसक विभाजन की कहानी होने के अतिरिक्त यह इस बात की भी कहानी है कि कैसे एक जीवन शैली तथा वर्षों पुराने सह-अस्तित्व का युग अचानक और नाटकीय रूप से समाप्त हो गया।

लगभग 60 लाख गैर-मुसलमान उस क्षेत्र से निकल आए, जो बाद में पश्चिमी पाकिस्तान बन गया। 65 लाख मुसलमान पंजाब, दिल्ली, आदि के भारतीय हिस्सों से पश्चिमी पाकिस्तान चले गए थे।

20 लाख गैर-मुसलमान पूर्वी बंगाल, जो बाद में पूर्वी पाकिस्तान बना, से निकल कर पश्चिम बंगाल आए। 1950 में 20 लाख और ग़ैर मुस्लमान पश्चिम बंगाल आए। दस लाख मुसलमान पश्चिम बंगाल से पूर्वी पाकिस्तान चले गए।

इस विभीषिका में मारे गए लोगों का आंकड़ा 5 लाख बताया जाता है। लेकिन अनुमानतः यह आंकड़ा पाँच से 10 लाख के बीच है।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

ब्रिटिश सरकार न्यायकर्ता की बजाय मध्यस्थ थी

20 फरवरी, 1947 को ब्रिटिश प्रधान मंत्री क्लेमेंट एटली ने हाउस ऑफ कॉमन्स में घोषणा की थी कि सरकार ने 30 जून, 1948 से पहले सत्ता का हस्तांतरण कर भारत छोड़ने का फैसला किया है । हालांकि पूरी प्रक्रिया को लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा तेजी से एक साल पहले किया गया था। माउंटबेटन 31 मई, 1947 को लंदन से सत्ता के हस्तांतरण पर मंजूरी लेकर नई दिल्ली लौटे थे। 2 जून, 1947 की ऐतिहासिक बैठक में विभाजन की योजना पर मोटे तौर पर सहमति बनी थी। भारत के विभाजन का निर्णय एक पूर्व शर्त की तरह था। सामान्य तौर पर इस योजना का व्यापक विरोध हुआ और विशेष रूप से इस विचार का कि भारत जैसे देश का विभाजन धार्मिक आधार पर किया जाना चाहिए। ऐसा कहा जाता है कि इस विभाजन के लिए वे ही नेता मानसिक रूप से तैयार थे, जिन्हें इस विभाजन में अपना हित और उज्ज्वल भविष्य दिख रहा था।

वायसराय माउंटबेटन के साथ जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, आचार्य कृपलानी, सरदार बलदेव सिंह, सरदार अब्दुर रब निश्तार, लियाकत अली और मोहम्मद अली जिन्ना

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

ऐतिहासिक पत्रकार सम्मेलन
4 जून, 1947

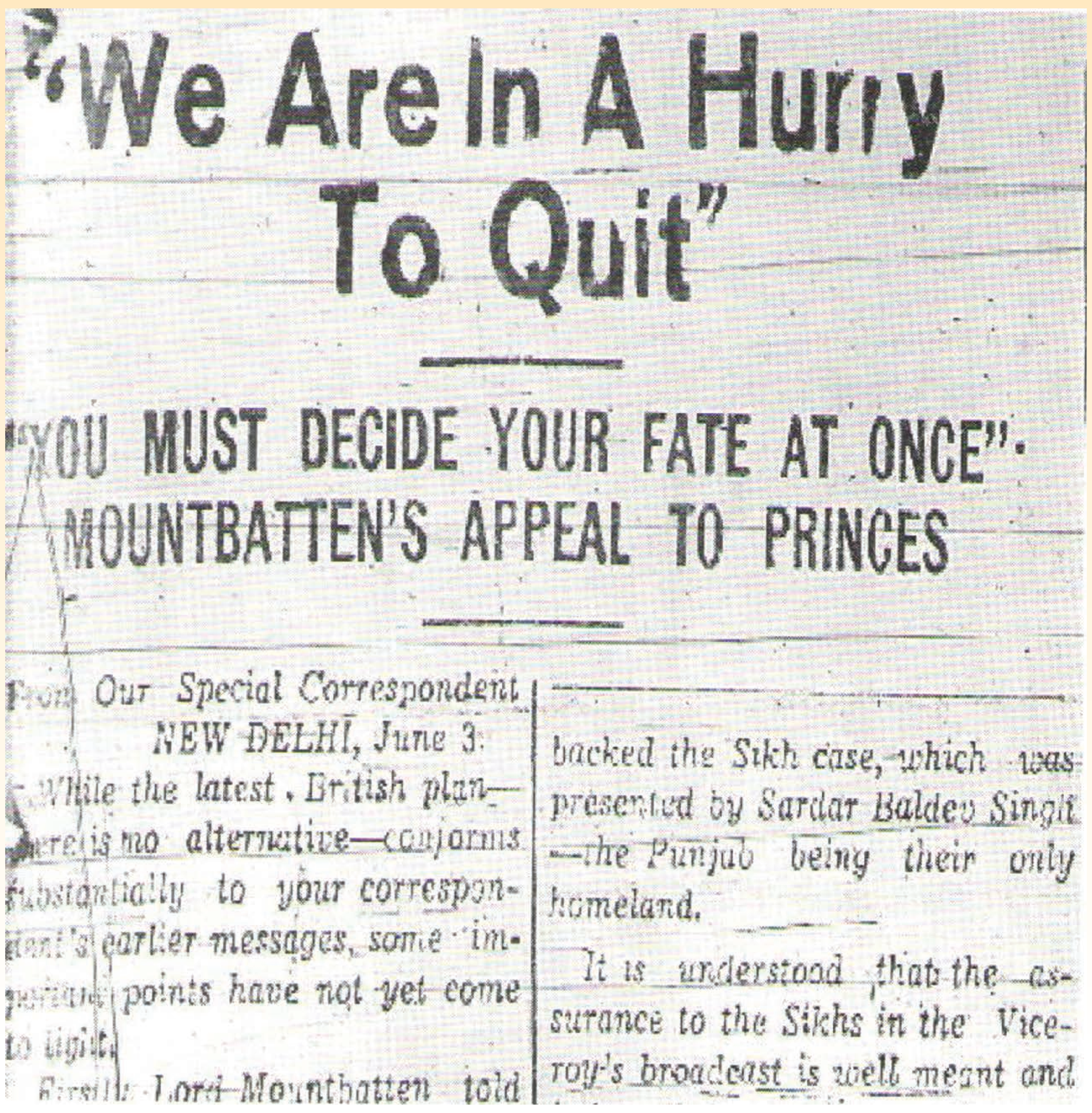

"We Are In A Hurry To Quit"

"YOU MUST DECIDE YOUR FATE AT ONCE":
MOUNTBATTEN'S APPEAL TO PRINCES

From Our Special Correspondent
NEW DELHI, June 3:
While the latest British plan—there is no alternative—conforms substantially to your correspondent's earlier messages, some important points have not yet come to light.
Firstly Lord Mountbatten told

backed the Sikh case, which was presented by Sardar Baldev Singh—the Punjab being their only homeland.
It is understood that the assurance to the Sikhs in the Viceroy's broadcast is well meant and

नई दिल्ली में 4 जून, 1947 को वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन ने एक ऐतिहासिक पत्रकार सम्मेलन को संबोधित किया। जैसे ही वायसराय ने पहले के समय से लगभग एक साल पहले सत्ता हस्तांतरण योजना की घोषणा की, उसके बाद कई प्रश्न पूछे गए। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न जनसंख्या के स्थानांतरण के बारे में था। वायसराय का उत्तर था : 'व्यक्तिगत रुप से मैं कोई दिक्कत नहीं देखता, स्थानांतरण के कुछ उपाय स्वाभाविक रुप से आएंगे... लोग अपने आप को स्थानांतरित कर लेंगे...' (द ट्रिब्यून, 5 जून, 1947) । बाद में देखा गया कि लॉर्ड माउंटबेटन का यह कथन वास्तविकता से कितना दूर था। विभाजन के फलस्वरूप 1.3 करोड़ लोग अपनी जड़ों से उखड़ कर विस्थापित होने के लिए बाध्य कर दिए गए थे।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

विभाजन के लिए संकल्पबद्ध मुस्लिम लीग

इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज, 5 जुलाई, 1947
डिजिटल फोटो आर्काइव्स एनएमएमएल, नई दिल्ली

अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की बैठक 9 जून, 1947 को नई दिल्ली के इम्पीरियल होटल में हुई थी। विभाजन की मांग वाला प्रस्ताव लगभग सर्वसम्मति से पारित हुआ, जिसमे पक्ष में 300 और विरोध में मात्र 10 मत पड़े। लीग के कई नेता पाकिस्तान के नए अधिराज्य के दो भागों, पूरब और पश्चिम में, विभाजित होने से नाखुश थे। जैसा कि समय ने साबित किया, यह एक व्यावहारिक विचार नहीं था। कालांतर में यह सिद्ध भी हो गया। 1971 में पूर्वी पाकिस्तान, पाकिस्तान से अलग हो गया और एक नए स्वतंत्र राज्य के रूप मे बांग्लादेश का गठन हुआ।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

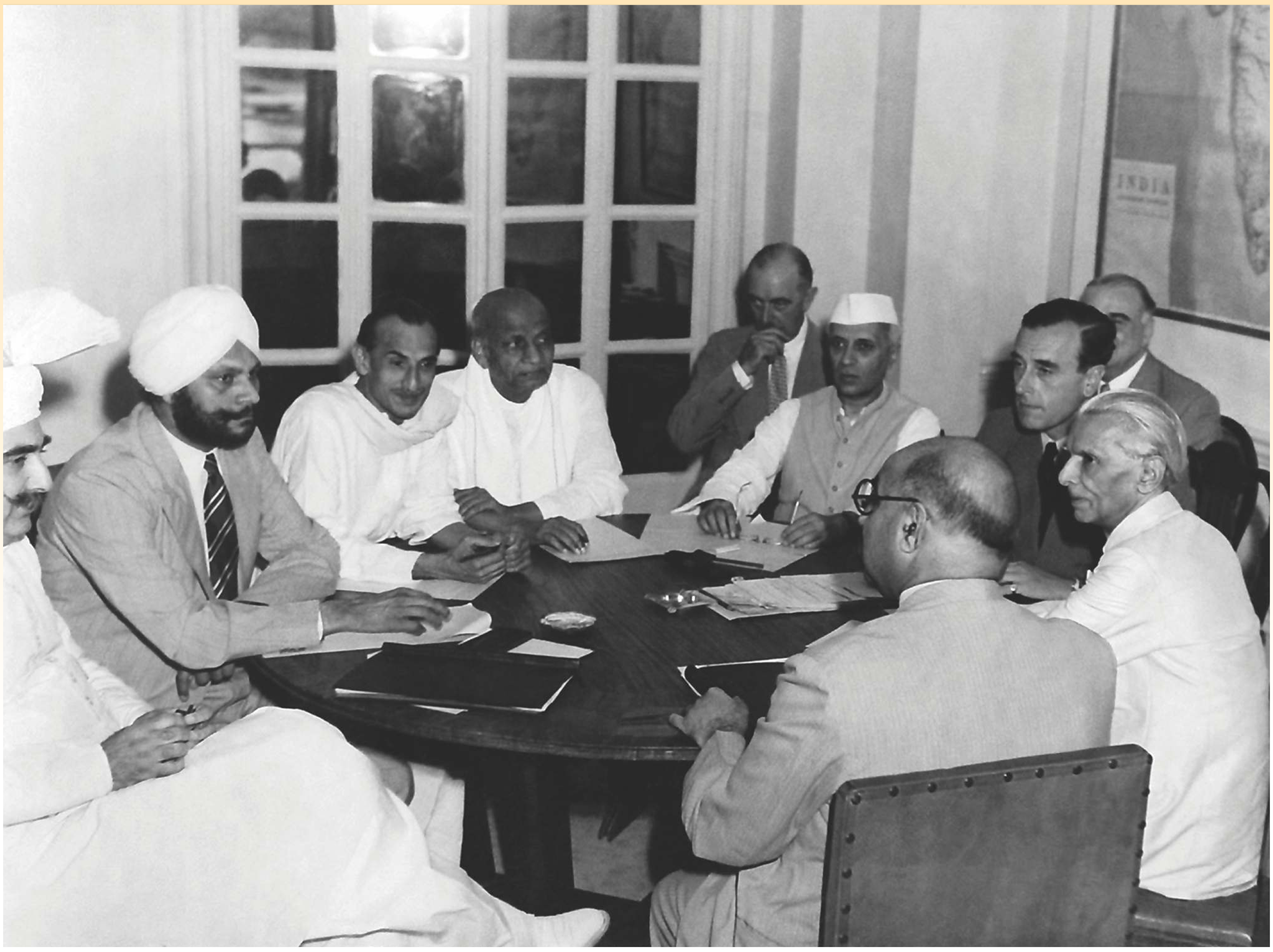

2 जून 1947 को भारतीय नेताओं के साथ बैठक। माउंटबेटन के बाएं से जिन्ना, लियाकत अली खान, सरदार अब्दुर रब निश्तार, सरदार बलदेव सिंह, आचार्य कृपलानी, सरदार पटेल और पंडित नेहरु।

लॉर्ड माउंटबेटन ने 4 जून को आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में,
14/15 अगस्त को स्वतंत्रता की तारीख के रूप में घोषित किया।
यह आकस्मिक था। माउंटबेटन द्वारा घोषित समय सारिणी पर अमल के लिए
18 जुलाई को ब्रिटिश संसद द्वारा भारत का स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया गया था।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

जहाँ सह-अस्तित्व जीवन का एक तरीका था

भारत के विभिन्न हिस्सों को दहला देने वाली 1946 और 1947 में हुई सांप्रदायिक हिंसा की व्यापकता और क्रूरता पर विस्तार से लिखा गया है। हिंसा की प्रकृति न केवल लोगों के जीवन को नष्ट करने, बल्कि दूसरे समूह की सांस्कृतिक और भौतिक उपस्थिति को भी मिटा देने की थी।

यह यथार्थ है कि जिन क्षेत्रों ने इस हिंसा को देखा, उन्होंने उन्हीं समुदायों को सदियों से सह अस्तित्व में रहते देखा था। पंजाब, बिहार, संयुक्त प्रांत और निश्चित रुप से बंगाल कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जहां सह - अस्तित्व जीवन का एक तरीका रहा है। झड़पें होती थीं, लेकिन वह आमतौर पर स्थानीय थीं और जितनी जल्दी शुरु होती थीं, उतनी ही जल्दी खत्म भी होती थीं। 1947 से पूर्व के पंजाब में एक भी ऐसे गांव की पहचान कठिन होगी, जिस पर किसी खास समुदाय द्वारा विशिष्टता के साथ दावा किया जा सके।

द्वितीय विश्वयुद्ध की तबाही के समान ध्वस्त किए जाने के बाद लाहौर का नाटा बाज़ार।

दंगों के दौरान ब्रिटिश सैनिक अमृतसर की गलियों में गश्त लगाते हुए।

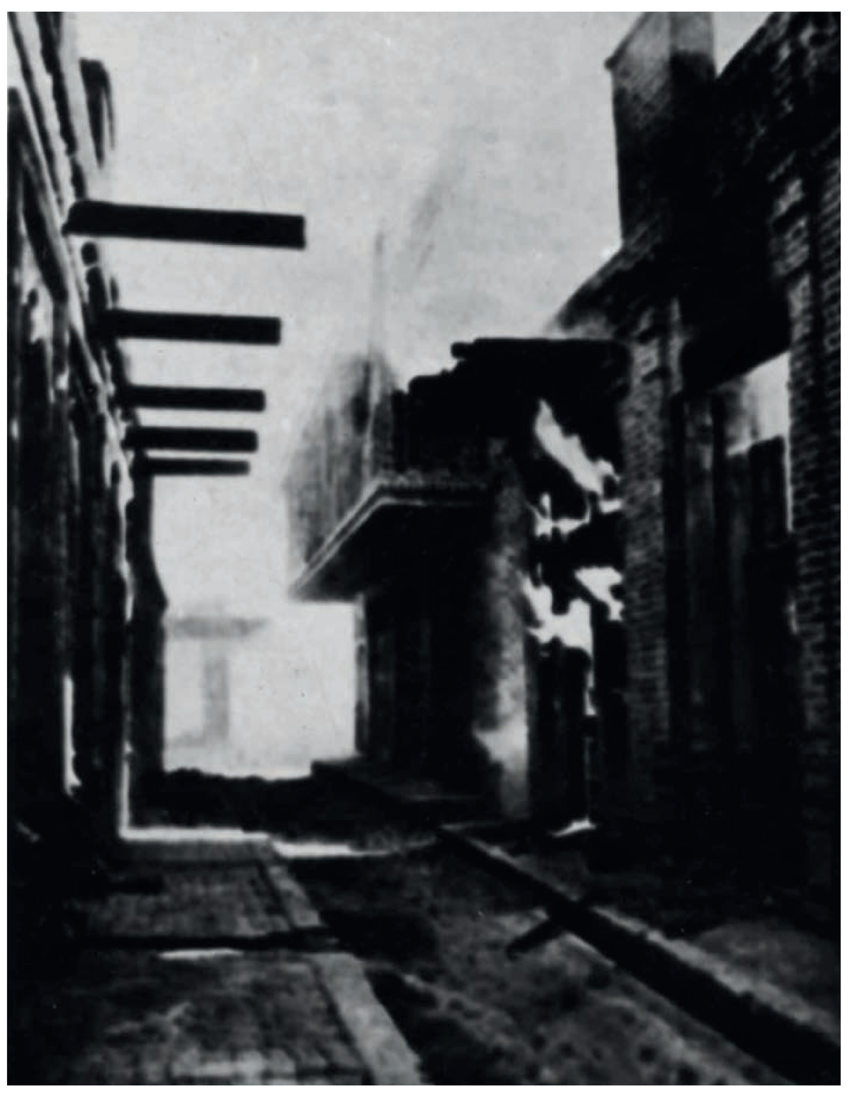

पंजाब में ऐसे कई खास दृश्य दिखे : रावलपिंडी के पास मांडेर गांव में दुकानों और घरों में आग लगाई गई।
मार्च, 1947

सांप्रदायिक दंगों के बाद निवासियों को भोजन प्राप्त करने हेतु कर्फ्यू में ढील दी गई। ढील के दौरान ली गई अमृतसर में ध्वस्त इमारतों की तस्वीर।

भारत सरकार

प्रेस की राय: 'यह दुखद है कि भारत को अधिराज्य का दर्जा विभाजन में मिला न कि एकता में'

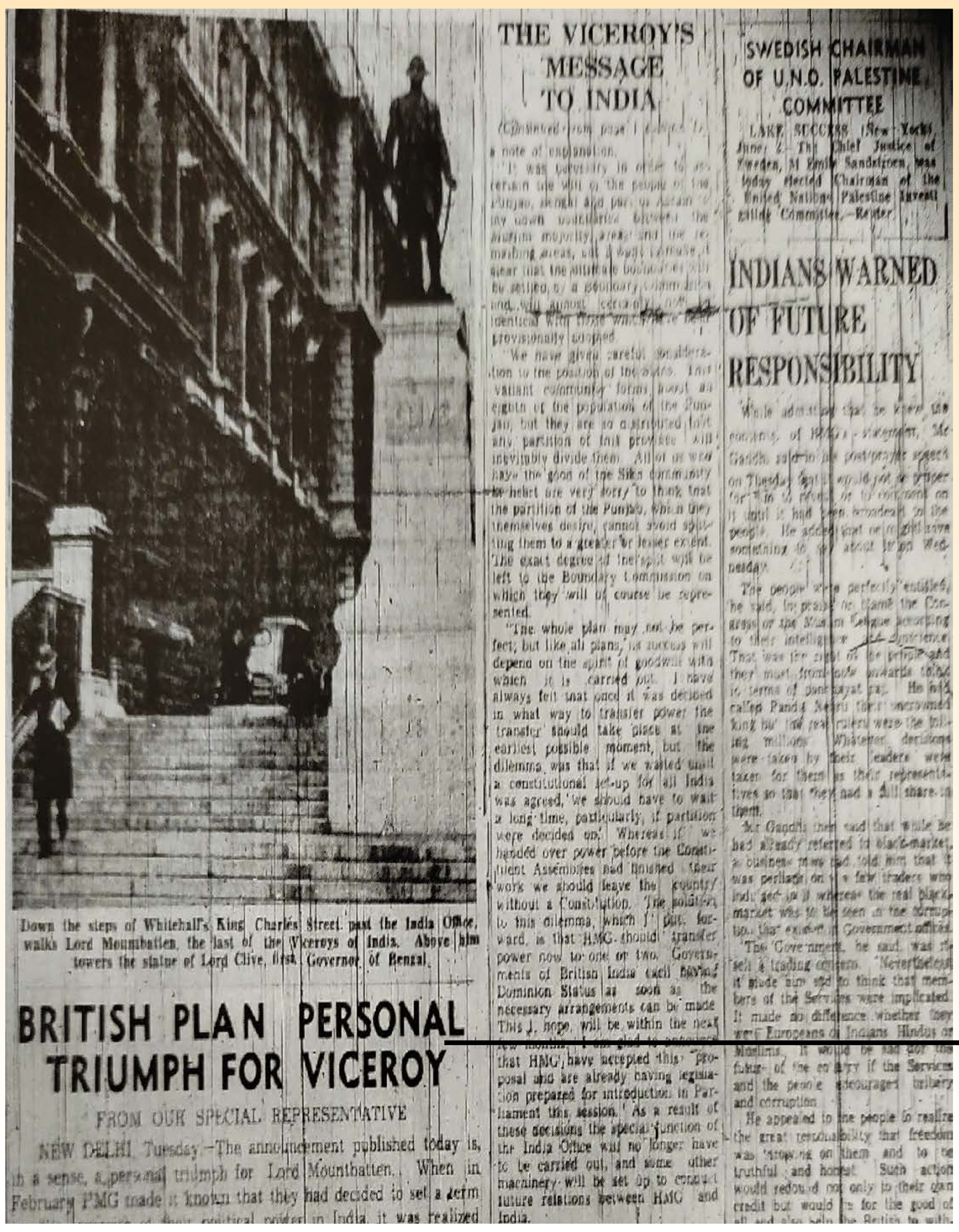

THE VICEROY'S MESSAGE TO INDIA

SWEDISH CHAIRMAN OF U.N.O. PALESTINE COMMITTEE

INDIANS WARNED OF FUTURE RESPONSIBILITY

Down the steps of Whitehall's King Charles Street past the India Office, walks Lord Mountbatten, the last of the Viceroys of India. Above him towers the statue of Lord Clive, first Governor of Bengal.

BRITISH PLAN PERSONAL TRIUMPH FOR VICEROY

FROM OUR SPECIAL REPRESENTATIVE

NEW DELHI, Tuesday.—The announcement published today is, in a sense, a personal triumph for Lord Mountbatten. When in February HMG made it known that they had decided to set a term ...

जो लोग कह रहे हैं कि भारत का विभाजन लगभग अपरिहार्य हो गया है और साथ ही, अपने देशवासियों से स्वतंत्रता के उपहार को प्राप्त करने के लिए तैयार होने की अपील कर रहे हैं, वे विरोधाभासी शब्दों में बात कर रहे हैं। मेरी राय में नेता... ब्रिटिश कूटनीति के शिकार हो गए हैं।

-बाबा खड़क सिंह, पंजाब के वरिष्ठ और अत्यंत समादृत नेता
- द ट्रिब्यून, 25 जून, 1947

ब्रिटिश योजना वायसरॉय के लिए व्यक्तिगत जीत

सर सी. जे. रैडक्लिफ (30 मार्च, 1899- 1 अप्रैल, 1977)

सर रेडक्लिफ, वह व्यक्ति जिन्हें विभाजन के लिए रेखा खींचने का काम सौंपा गया था। वह पहले कभी भारत नहीं आए थे। उनके पास जटिलताओं को समझने का कोई तरीका नहीं था। जब उनसे पहली बार पंजाब सीमा आयोग के प्रमुख के रूप में दायित्व निभाने के लिए संपर्क किया गया था, उनसे जून 1948 तक कार्य पूरा करने की उम्मीद की गई थी। लेकिन जैसा कि सत्ता हस्तांतरण का कार्य तीव्र कर दिया गया था, उनके पास रेखा खींचने के लिए महज तीन सप्ताह था। इस प्रक्रिया को एक व्यक्तिगत एजेंडे की तरह लागू किया गया था। रिपोर्ट से पता चलता है कि पूरी योजना और इसके कार्यान्वयन को समय से पहले किए जाने को, वायसराय की व्यक्तिगत जीत के रूप में देखा गया था ।

'खतरनाक सिद्धांत- अर्थात् एक व्यक्ति धर्म के साथ अपनी राष्ट्रीयता बदलता है'

स्पष्ट रुप से मैं समझ नहीं पा रहा हूँ... विभाजन की ब्रिटिश योजना को स्वीकार करने के पीछे का कारण क्या है... मैं अपनी सरकार का समर्थन करने के लिए बाध्य हूं... मुझे यह कहते हुए खेद है कि...हमने एक खतरनाक सिद्धांत को स्वीकार कर लिया है यानी एक व्यक्ति धर्म के साथ अपनी राष्ट्रीयता बदलता है...क्या इस प्रतिक्रियावादी सिद्धांत की स्वीकृति से भारत को गृहयुद्ध से बचने में मदद मिलेगी, मुझे नहीं पता।
विलियम डोबी, संसद सदस्य, हाउस ऑफ कॉमन्स
- द ट्रिब्यून, 6 जून, 1947

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

"WE SHALL NOT BE CARRIED AWAY BY RELIGIOUS CONSIDERATIONS"

Welfare of Kashmir Our First Concern

Sheikh Abdullah's Address to National Conference Workers

SRINAGAR, Oct. 11.—"You can rest assured that the National Conference will give out its opinion on the question of Kashmir joining the Indian Union or Pakistan after considering it solely from the point of view of the welfare and prosperity of our country. Religious and other prejudices will not stand in our way to find the correct solution of this important issue," said Sheikh Abdullah, President of the All India States People's Conference, addressing a gathering of National Conference workers at Mujahid Manzil.

Continuing, Sheikh Abdullah said: "Our Prime concern at this stage is the emancipation of 40 lakhs of people living in this State. We can consider the question of joining one or the other dominion only when we have achieved our objective. We cannot decide it so long as we are slaves. Of course, we will support accession to that dominion where our demand for freedom will be recognised and encouraged. We cannot join those who say that the issue of accession is to be decided by the Rajas, Nawabs and Nizams and not by the people."

Referring next to the "Quit Kashmir" slogan which was sponsored by him, he said: "This slogan meant nothing more than this that sovereignty belonged to the people of the State and that the Maharaja should rule as a constitutional monarch. The right of making or marring our destinies should be ours. This perfectly genuine demand was wrongly interpreted and the outside world was made to believe that I aimed at the deposition of the ruler. The people of Jammu and Kashmir States are inseparably connected with the nine crores of people living in the 562 Indian States. The States people are out to secure freedom from the unbridled aristocracy and establish democratic governments in all states. The ruler may be there, but only as constitutional heads. Power must be transferred to the people."—U.P. I.

SHEIKH ABDULLAH FLYING TO DELHI

SRINAGAR, Oct. 11.—Sheikh Abdullah, President, All-India States People's Conference, proposes to fly to New Delhi shortly to acquaint himself with the satyagraha movements in some of the Indian States. He will also arrange for the repatriation of those Kashmiris in India who wanted to return to Kashmir. Sheikh Abdulla will meet Pandit Jawaharlal Nehru during his stay in Delhi.—U. P. I.

INDIAN MUSLIMS PLEDGE LOYALTY

NEW DELHI, Oct. 11.—Syed Fazal Haq, a Muslim League leader of Orissa, has, in a statement, extended the support of the Muslims of Orissa to the Indian Dominion.

The Shia Political Conference from Bombay has also declared its whole-hearted loyalty to the Indian Union and has expressed determination to regard India as their motherland.

हमें धार्मिक विचारों से दूर नहीं किया जा सकता है, कश्मीर का कल्याण हमारी पहली चिंता है।

- शेख अब्दुल्ला का नेशनल कांफ्रेंस के कार्यकर्ताओं को संबोधन

विस्थापन

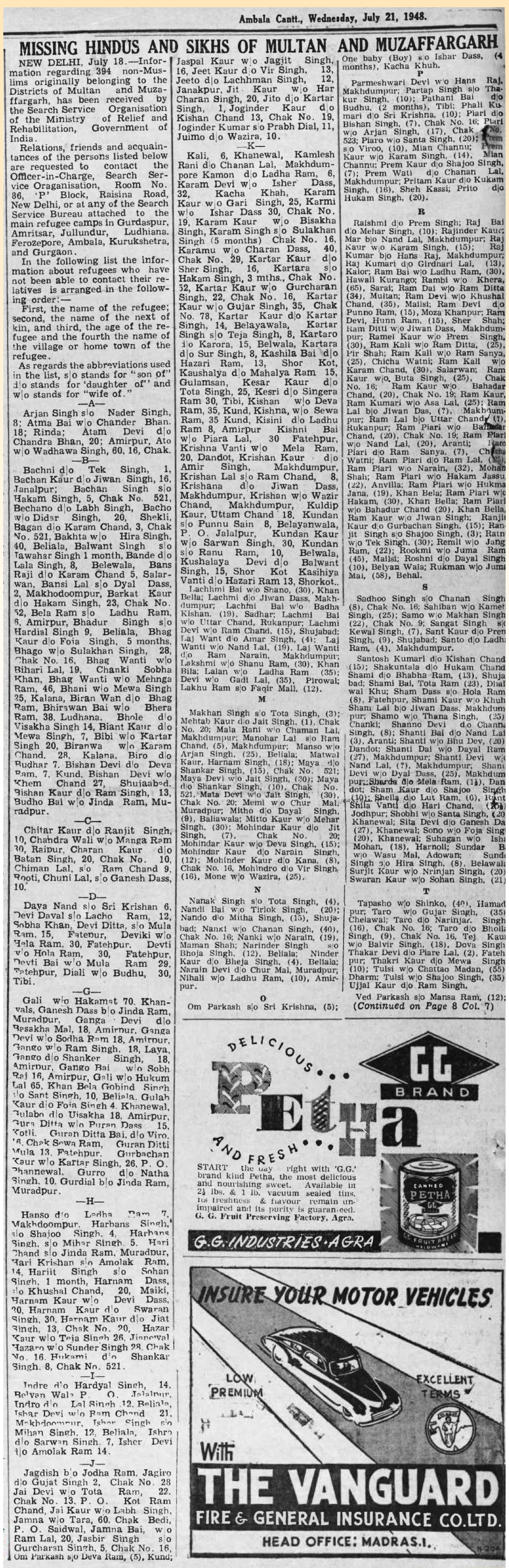

Ambala Cantt., Wednesday, July 21, 1948.

MISSING HINDUS AND SIKHS OF MULTAN AND MUZAFFARGARH

NEW DELHI, July 18.—Information regarding 394 non-Muslims originally belonging to the Districts of Multan and Muzaffargarh, has been received by the Search Service Organisation of the Ministry of Relief and Rehabilitation, Government of India.

Relations, friends and acquaintances of the persons listed below are requested to contact the Officer-in-Charge, Search Service Oraganisation, Room No. 86, 'P' Block, Raisina Road, New Delhi, or at any of the Search Service Bureau attached to the main refugee camps in Gurdaspur, Amritsar, Jullundur, Ludhiana, Ferozepore, Ambala, Kurukshetra, and Gurgaon.

In the following list the information about refugees who have not been able to contact their relatives is arranged in the following order:—

First, the name of the refugee; second, the name of the next of kin, and third, the age of the refugee and the fourth the name of the village or home town of the refugee.

As regards the abbreviations used in the list, s|o stands for "son of" d|o stands for 'daughter of'' and w|o stands for "wife of."

—A—

Arjan Singh s|o Nader Singh, 8; Atma Bai w|o Chander Bhan. 18; Rinda; Atam Devi d|o Chandra Bhan, 20; Amirpur, Ato w|o Wadhawa Singh, 60, 16, Chak.

—B—

Bachni d|o Tek Singh, 1, Bachan Kaur d|o Jiwan Singh, 16, Janalpur; Bachan Singh s|o Hakam Singh, 5, Chak No. 521, Bechano d|o Labh Singh, Bacho w|o Didar Singh, 20, Shekli, Bagan d|o Karam Chand, 3, Chak No. 521, Bakhta w|o Hira Singh, 40, Beliala, Balwant Singh s|o Jawahar Singh 1 month, Bande d|o Lala Singh, 8, Belewala, Bans Raji d|o Karam Chand 5, Salarwan, Bansi Lal s|o Dyal Dass, 2, Makhodoompur, Barkat Kaur d|o Hakam Singh, 23, Chak No. 52, Bela Ram s|o Ladhu Ram, 8, Amirpur, Bhadur Singh s|o Hardial Singh 9, Beliala, Bhag Kaur d|o Foia Singh, 5 months, Bhago w|o Sulakhan Singh, 28, Chak No. 16, Bhag Wanti w|o Bihari Lal, 19, Chanki Sobha Khan, Bhag Wanti w|o Mehnga Ram, 46, Bhani w|o Mewa Singh 25, Kalana, Biran Wan d|o Bhag Ram, Bhirawan Bai w|o Bhera Ram, 38, Ludhana, Bhole d|o Visakha Singh 14, Biant Kaur d|o Mewa Singh, 7, Bibi w|o Kartar Singh 20, Biranwa w|o Karam Chand, 28, Kalana, Biro d|o Budhar 7. Bishan Devi d|o Deva Ram, 7, Kund, Bishan Devi w|o Khem Chand 27, Shujaabad, Bishan Kaur d|o Ram Singh, 13, Budho Bai w|o Jinda Ram, Muradpur.

—C—

Chitar Kaur d|o Ranjit Singh, 10, Chandra Wali w|o Manga Ram 30, Raipur, Charan Kaur d|o Batan Singh, 20, Chak No. 10, Chiman Lal, s|o Ram Chand 9, Rooti, Chuni Lal, s|o Ganesh Dass, 10.

—D—

Daya Nand s|o Sri Krishan 6, Devi Daval s|o Lacho Ram, 12, Sobha Khan, Devi Ditta, s|o Mula Ram, 15, Fatepur, Deviki w|o Hela Ram, 30, Fatehpur, Devti w|o Hola Ram, 30, Fatehpur, Devti Bai w|o Mula Ram 29, Fatehpur, Diali w|o Budhu, 30, Tibi.

—G—

Gali w|o Hakamat 70, Khanvals, Ganesh Dass b|o Jinda Ram, Muradpur, Ganga Devi d|o Basakha Mal, 18, Amirpur, Ganga Devi w|o Sodha Ram 18, Amirpur, Gango w|o Ram Singh, 18, Laya, Gango d|o Shanker Singh, 18, Amirpur, Gango Bai w|o Sobh Raj 16, Amirpur, Gali w|o Hukum Lal 65, Khan Bela Gobind Singh s|o Sant Singh, 10, Beliala, Gulab Kaur d|o Foja Singh 4, Khanewal, Gulabo d|o Uisakha 18, Amirpur, Gura Ditta w|o Puran Dass 15, Kotli, Guran Ditta Bai, d|o Viro, 16, Chak Sewa Ram, Guran Ditti Mula 13, Fatehpur, Gurbachan Kaur w|o Kartar Singh, 26, P. O. Channewal, Gurro d|o Natha Singh, 10, Gurdial b|o Jinda Ram, Muradpur.

—H—

Hanso d|o Ladha Ram 7, Makhdoompur, Harbans Singh, s|o Shajoo Singh, 4, Harbans Singh, s|o Mihar Singh, 5, Hari Chand s|o Jinda Ram, Muradpur, Hari Krishan s|o Amolak Ram, 14, Harjit Singh s|o Sohan Singh, 1 month, Harnam Dass, s|o Khushal Chand, 20, Maiki, Harnam Kaur w|o Devi Dass, 20, Harnam Kaur d|o Swaran Singh, 30, Harnam Kaur d|o Jiat Singh, 13, Chak No. 20, Hazar Kaur w|o Teja Singh 26, Jinnewal Hazaro w|o Sunder Singh 28, Chak No. 16, Hukami d|o Shankar Singh, 8, Chak No. 521.

—I—

Indre d|o Hardyal Singh, 14, Belvan Wala P. O. Jalalpur, Indro d|o Lal Singh 12, Beliala, Ishar Devi w|o Ram Chand 21, Makhdoompur, Isher Singh s|o Mihan Singh, 12, Beliala, Ishro d|o Sarwan Singh, 7, Isher Devi d|o Amolak Ram 14.

—J—

Jagdish b|o Jodha Ram, Jagiro d|o Gujat Singh 2, Chak No. 28 Jai Devi w|o Tota Ram, 22, Chak No. 13, P. O. Kot Ram Chand, Jai Kaur w|o Labh Singh, Jamna w|o Tara, 60, Chak Bedi, P. O. Saidwal, Jamna Bai, w|o Ram Lal, 20, Jasbir Singh s|o Gurcharan Singh, 5, Chak No. 16, Om Parkash s|o Deva Ram, (5), Kund; Jaspal Kaur w|o Jagjit Singh, 16, Jeet Kaur d|o Vir Singh, 13, Jeeto d|o Lachhman Singh, 12, Janakpur, Jit Kaur w|o Har Charan Singh, 20, Jito d|o Kartar Singh, 1, Joginder Kaur d|o Kishan Chand 13, Chak No. 19, Joginder Kumar s|o Prabh Dial, 11, Juimo d|o Wazira, 10.

—K—

Kali, 6, Khanewal, Kamlesh Rani d|o Chanan Lal, Makhdumpore Kamon d|o Ladha Ram, 6, Karam Devi w|o Isher Dass, 32, Kacha Khah, Karam Kaur w|o Gari Singh, 25, Karmi w|o Ishar Dass 30, Chak No. 19, Karam Kaur w|o Bisakha Singh, Karam Singh s|o Sulakhan Singh (5 months) Chak No. 16, Karamu w|o Charan Dass, 40, Chak No. 29, Kartar Kaur d|o Sher Singh, 16, Kartara s|o Hakam Singh, 3 mths., Chak No. 52, Kartar Kaur w|o Gurcharan Singh, 22, Chak No. 16, Kartar Kaur w|o Gujar Singh, 35, Chak No. 78, Kartar Kaur d|o Kartar Singh, 14, Belayawala, Kartar Singh s|o Teja Singh, 8, Kartaro d|o Karora, 15, Belwala, Kartara d|o Sur Singh, 8, Kashila Bai d|o Hazari Ram, 13, Shor Kot, Kaushalya d|o Mahalya Ram 15, Gulamsan, Kesar Kaur d|o Tota Singh, 25, Kesri d|o Singera Ram 30, Tibi, Kishan w|o Deva Ram, 35, Kund, Kishna, w|o Sewa Ram, 35 Kund, Kisini d|o Ladhu Ram 8, Amirpur Kishni Bai w|o Piara Lal, 30 Fatehpur, Krishna Vanti w|o Mela Ram, 20, Dandot, Krishan Kaur d|o Amir Singh, Makhdumpur, Krishan Lal s|o Ram Chand, 8, Krishana d|o Jiwan Dass, Makhdumpur, Krishan w|o Wazir Chand, Makhdumpur, Kuldip Kaur, Uttam Chand 18, Kundan s|o Punnu Sain 8, Belayanwala, P. O. Jalalpur, Kundan Kaur w|o Sarwan Singh, 30, Kundan s|o Ranu Ram, 10, Belwala, Kushalaya Devi d|o Balwant Singh, 15, Shor Kot Kasihiya Vanti d|o Hazari Ram 13, Shorkot..

Lachhmi Bai w|o Shano, (30), Khan Bella; Lachmi d|o Jiwan Dass, Makhdumpur; Lachmi Bai w|o Badha Kishan, (19), Sadhar; Lachmi Bai w|o Uttar Chand, Rukanpur; Lachmi Devi w|o Ram Chand, (15), Shujabad; Laj Want d|o Amar Singh, (4); Laj Wanti w|o Nand Lal, (19), Laj Wanti d|o Ram Narain, Makhdumpur; Lakshmi w|o Shanu Ram, (30), Khan Bila; Lalan w|o Ladha Ram (35); Devi w|o Gadi Lal, (35), Pirowal; Lakhu Ram s|o Faqir Mall, (12).

M

Makhan Singh s|o Tota Singh, (3); Mehtab Kaur d|o Jait Singh, (1), Chak No. 20; Mala Rani w|o Chaman Lal, Makhdumpur; Manohar Lal s|o Ram Chand, (5), Makhdumpur; Manso w|o Arjan Singh, (25), Beliala; Matwal Kaur, Harnam Singh, (18); Maya d|o Shankar Singh, (15), Chak No. 521; Maya Devi w|o Jait Singh, (30); Maya d|o Shankar Singh, (10), Chak No. 521, Mata Devi w|o Jait Singh, (30), Chak No. 20; Memi w|o Chur Mal, Muradpur; Mitho d|o Dayal Singh, (9), Baliawala; Mitto Kaur w|o Mehar Singh, (30); Mohindar Kaur d|o Jit Singh, (7), Chak No. 20; Mohindar Kaur w|o Deva Singh, (15); Mohindar Kaur d|o Narain Singh, (12); Mohinder Kaur d|o Kana, (8), Chak No. 16, Mohindro d|o Vir Singh, (16), Mone w|o Wazira, (25).

N

Nanak Singh s|o Tota Singh, (4), Nandi Bai w|o Tirlok Singh, (20); Nando d|o Mitha Singh, (15), Shujabad; Nanki w|o Chanan Singh, (40), Chak No. 16; Nanki w|o Narain, (19), Maman Shah; Narinder Singh s|o Bhoja Singh, (12), Beliala; Ninder Kaur d|o Bheja Singh, (4), Beliala; Narain Devi d|o Chur Mal, Muradpur; Nihali w|o Ladhu Ram, (10), Amirpur.

O

Om Parkash s|o Sri Krishna, (5); One baby (Boy) s|o Ishar Dass, (4 months), Kacha Khuh.

P

Parmeshwari Devi w|o Hans Raj, Makhdumpur; Partap Singh s|o Thakur Singh, (10); Pathani Bai d|o Budhu, (2 months), Tibi; Phali Kumari d|o Sri Krishna, (10); Piari d|o Bishan Singh, (7), Chak No. 16; Piari w|o Arjan Singh, (17), Chak No. 523; Piaro w|o Santa Singh, (20); Prem s|o Viroo, (10), Mian Channu; Prem Kaur w|o Karam Singh, (14), Mian Channu; Prem Kaur d|o Shajoo Singh, (7); Prem Wati d|o Chanan Lal, Makhdumpur; Pritam Kaur d|o Kukam Singh, (16), Sheh Kassi; Prito d|o Hukam Singh, (20).

R

Raishmi d|o Prem Singh; Raj Bai d|o Mehar Singh, (10); Rajinder Kaur; Mar b|o Nand Lal, Makhdumpur; Raj Kaur w|o Karam Singh, (15); Raj Kumar b|o Hans Raj, Makhdumpur; Raj Kumari d|o Girdhari Lal, (13), Kalor; Ram Bai w|o Ladhu Ram, (30), Hawali Kurango; Rambi w|o Khera, (65), Sarai; Ram Dai w|o Ram Ditta (34), Multan; Ram Devi w|o Khushal Chand, (35), Mailsi; Ram Devi d|o Punno Ram, (15), Moza Khanpur; Ram Devi, Hunn Ram, (15), Sher Shah; Ram Ditti w|o Jiwan Dass, Makhdumpur; Ramei Kaur w|o Prem Singh, (30), Ram Kali w|o Ram Ditta, (25), Pir Shah; Ram Kali w|o Ram Sanya, (25), Chicha Watni; Ram Kali w|o Karam Chand, (30), Salarwan; Ram Kaur w|o Buta Singh, (25), Chak No. 16; Ram Kaur w|o Bahadar Chand, (20), Chak No. 19; Ram Kaur, Ram Kumari w|o Asa Lal, (25); Ram Lal b|o Jiwan Das, (?), Makhdumpur; Ram Lal b|o Uttar Chand, (?), Rukanpur; Ram Piari w|o Bahadar Chand, (20), Chak No. 19; Ram Piari w|o Nand Lal, (20), Aranti; Ram Piari d|o Ram Sanya, (7), Chicha Watni; Ram Piari d|o Ram Lal, (25); Ram Piari w|o Narain, (32), Mohan Shah; Ram Piari w|o Hakam Jassu, (22), Anvilla; Ram Piari w|o Hukma Jana, (19), Khan Bela; Ram Piari w|o Hakam, (30), Khan Bella; Ram Piari w|o Bahadur Chand (20), Khan Bella, Ram Kaur w|o Jiwan Singh; Ranjit Kaur d|o Gurbachan Singh, (15); Ranjit Singh s|o Shajoo Singh, (3); Ratni w|o Tek Singh, (30); Remli w|o Jang Ram, (22); Rookmi w|o Juma Ram (45), Mailsi; Roshni d|o Dayal Singh (10), Belyan Wala; Rukman w|o Juma Mal, (58), Behal.

S

Sadhoo Singh s|o Chanan Singh (8), Chak No. 16; Sahiban w|o Kameth Singh, (25); Samo w|o Makhan Singh (22), Chak No. 9; Sangat Singh s|o Kewal Singh, (7), Sant Kaur d|o Prem Singh, (9), Shujabad; Santo d|o Ladha Ram, (4), Makhdumpur.

Santosh Kumari d|o Kishan Chand (15); Shakuntala d|o Hukam Chand Shami d|o Bhabha Ram, (13), Shujabad; Shami Bai, Tota Ram (23), Dhalwal Khu; Sham Dass s|o Hola Ram (8), Fatehpur, Shami Kaur w|o Khuh Shani Lal b|o Jiwan Dass, Makhdumpur; Shamo w|o Thana Singh, (25), Chanki; Shanno Devi d|o Channa Singh, (8); Shanti Bai d|o Nand Lal (3), Aranti; Shanti w|o Bhu Dev, (20) Dandot; Shanti Dai w|o Dayal Ram (27), Makhdumpur; Shanti Devi w|o Nand Lal, (?), Makhdumpur; Shanti Devi w|o Dyal Dass, (25), Makhdumpur; Sharda d|o Mela Ram, (1½), Dandot; Sham Kaur d|o Shajoo Singh (10); Sheila d|o Lut Ram, (6), Ranti Shila Vanti d|o Hari Chand, (?) Jodhpur; Shobhi w|o Santa Singh, (20) Khanewal; Sita Devi d|o Ganesh Das (27), Khanewal; Sono w|o Foja Singh (20), Khanewal; Suhagan w|o Ishar Mohan, (18), Harnoli; Sundar Bai w|o Wasu Mal, Adowan; Sunder Singh s|o Hira Singh, (8), Belawala Surjit Kaur w|o Nrinjan Singh, (20) Swaran Kaur w|o Sohan Singh, (21)

T

Tapasho w|o Shinko, (40), Hamadpur; Taro w|o Gujar Singh, (35) Chelawal; Taro d|o Narinjar Singh (16), Chak No. 16; Taro d|o Bhoila Singh, (9), Chak No. 16, Tej Kaur w|o Balvir Singh, (18), Dova Singh Thakar Devi d|o Piare Lal, (2), Fatehpur; Thakri Kaur d|o Mewa Singh (10); Tulsi w|o Chattao Madan, (55) Dharm; Tulsi w|o Shajoo Singh, (35) Ujjal Kaur d|o Ram Singh.

Ved Parkash s|o Mansa Ram, (12);

(*Continued on Page 8 Col. 7*)

DELICIOUS...
Petha
AND FRESH...
GG BRAND
START the day right with 'G.G.' brand kind Petha, the most delicious and nourishing sweet. Available in 2½ lbs. & 1 lb. vacuum sealed tins. Its freshness & flavour remain unimpaired and its purity is guaranteed.
G. G. Fruit Preserving Factory, Agra.
CANNED PETHA
G.G. INDUSTRIES · AGRA

INSURE YOUR MOTOR VEHICLES
LOW PREMIUM
EXCELLENT TERMS
With
THE VANGUARD
FIRE & GENERAL INSURANCE CO. LTD.
HEAD OFFICE: MADRAS. 1.

यह समाचार पत्र वर्णानुक्रम में अंबाला, हरियाणा में लापता हिंदू और सिख शरणार्थियों के नाम सूचीबद्ध करता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि विभाजन के तुरंत बाद उपमहाद्वीप में लाखों लोगों के लिए स्थिति कितनी विकट और अनिश्चित थी। जैसा कि कुछ परिवारों ने अपने रिश्तेदारों को मरते हुए देखा, अन्य लगातार इस चिंता में रहते थे कि उनके प्रियजन के साथ क्या हुआ होगा। लोगों ने सहायता के लिए सरकार को लिखा, हालांकि, अधिकांश पत्र अनुत्तरित थे क्योंकि सरकार मानवीय संकट से निपटने के लिए संघर्ष कर रही थी। फिर भी, लोगों ने इस आशा और प्रत्याशा को भी आगे बढ़ाया कि शायद वे अपने लापता रिश्तेदारों को फिर से ढूंढ लेंगे।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

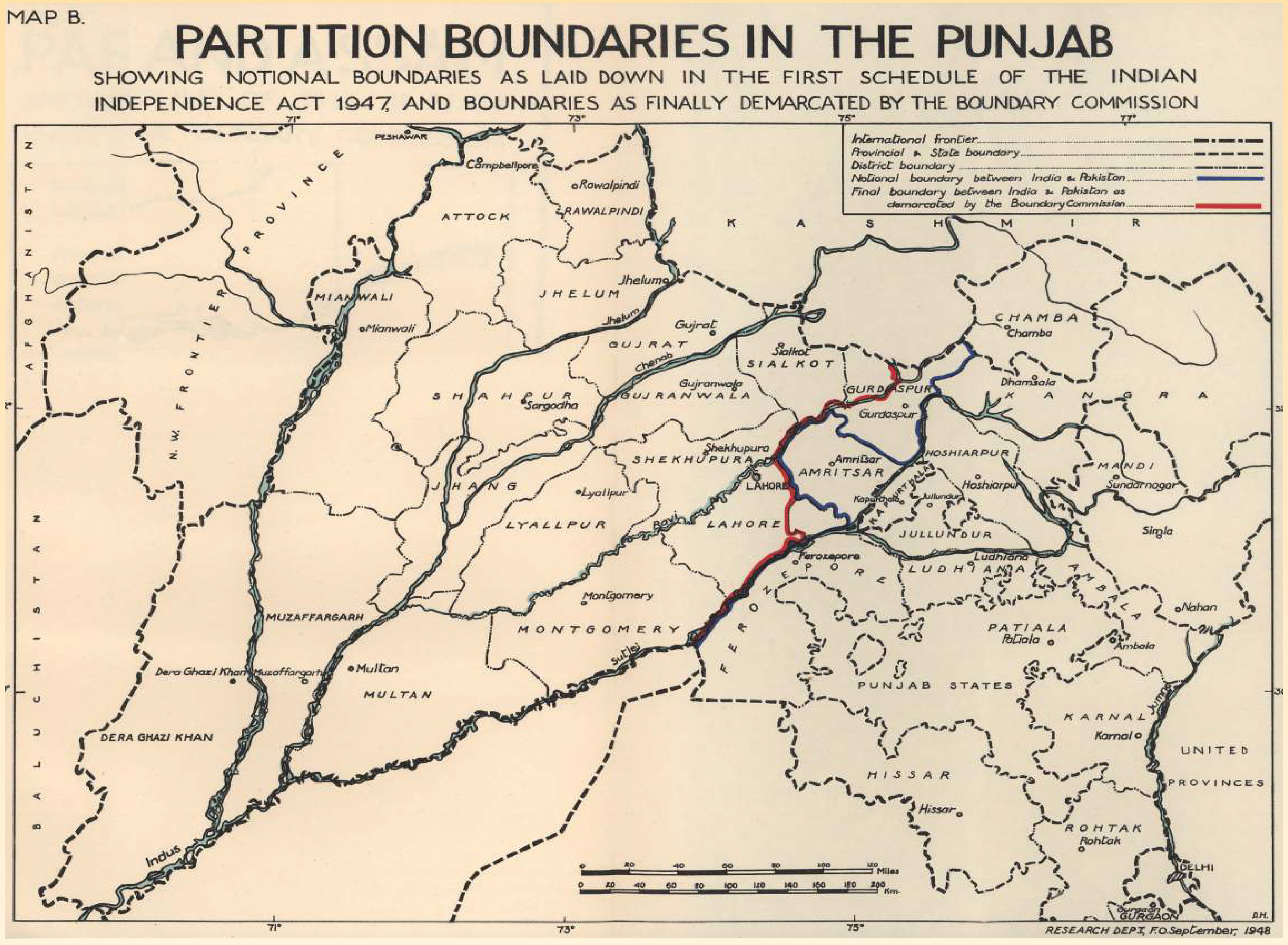

नक़्शे में पंजाब तथा बंगाल की निश्चित की गई सीमाएं

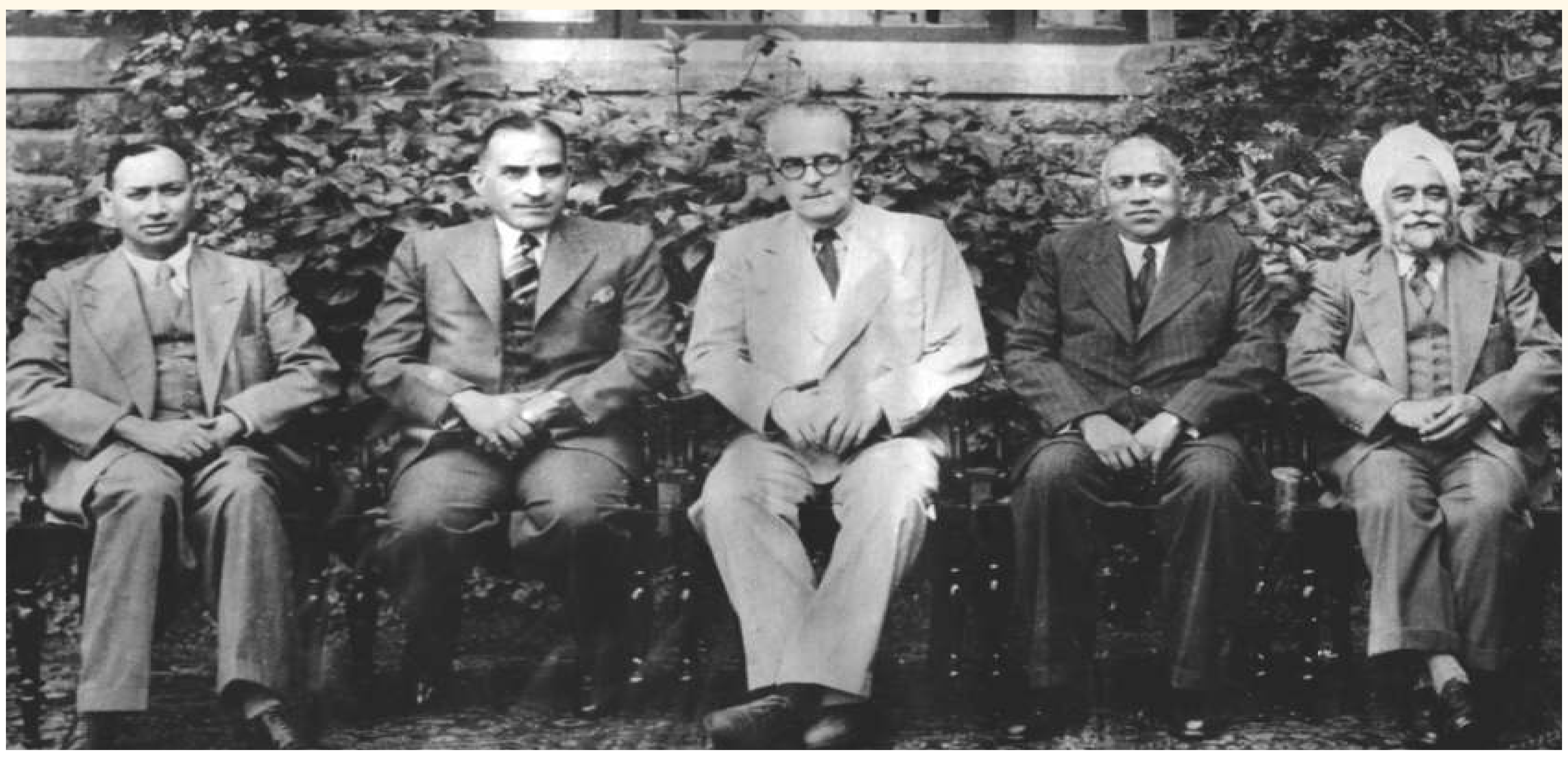

जून 1947 में, माउंटबेटन ने सर सिरिल रैडक्लिफ (बैरिस्टर) को दो सीमा आयोगों की अध्यक्षता करने के लिए कहा - एक बंगाल के लिए और एक पंजाब के लिए। उन्हें भारत का कोई ज्ञान नहीं था और वे इससे पहले कभी भारत नहीं आए थे। माउंटबेटन ने इसे एक अनुकूल बिन्दु माना क्योंकि कोई भी उन पर पक्षपाती होने का आरोप नहीं लगा सकता था। सीमा आयोग के सदस्य समान रूप से अलग-अलग थे, और विभाजन पर सहमत नहीं हुए थे। इस प्रकार निर्णय लेने की जिम्मेदारी रैडक्लिफ को सौंप दी गई थी। वे 8 जुलाई को भारत आए और उन्होंने 12 अगस्त तक अपनी रिपोर्ट पूरी कर ली थी।

बंगाल और असम की विभाजक सीमा रेखाएं

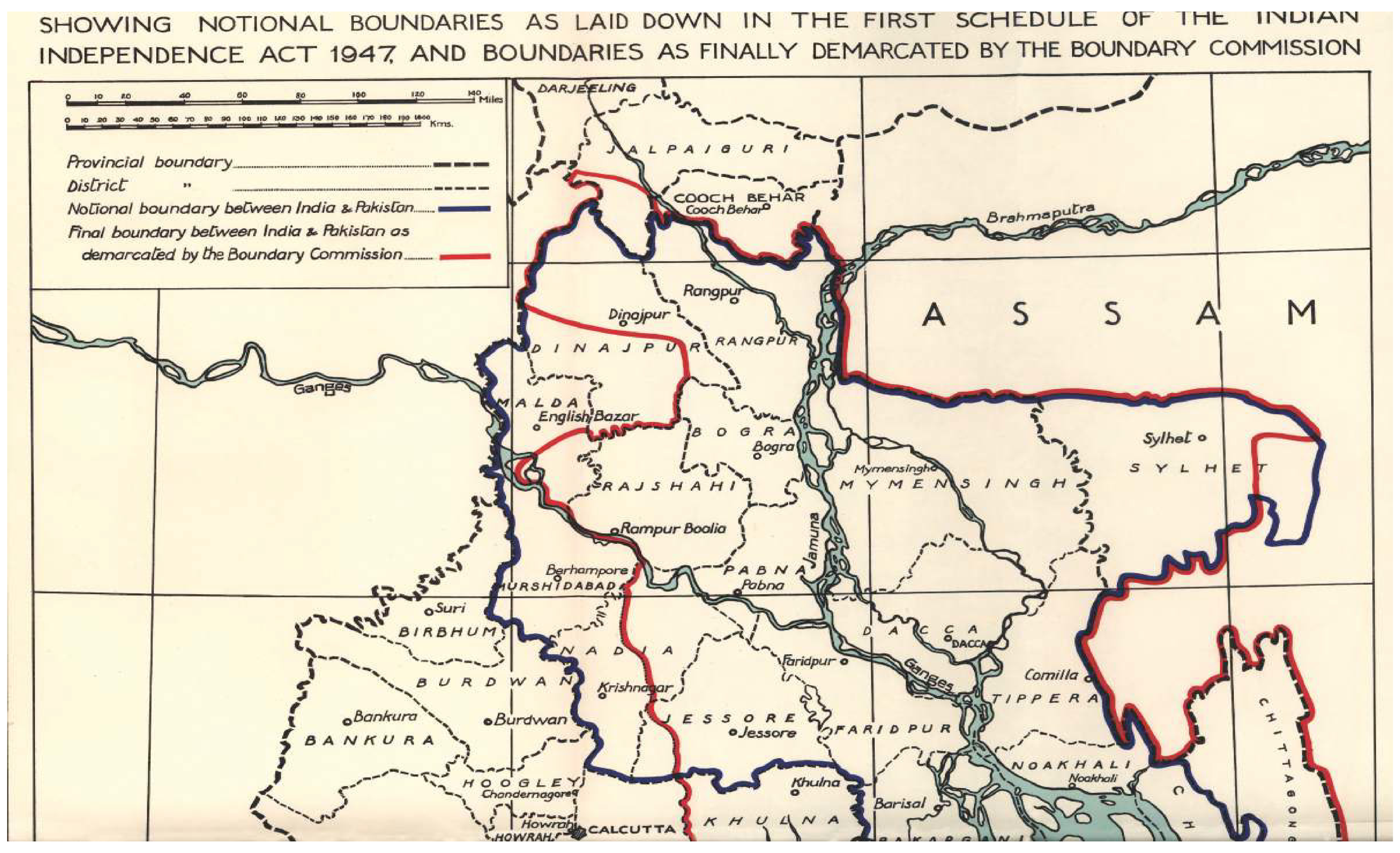

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
14 अगस्त

300,000 SEEK SAFETY IN INDIA

MASS EXODUS FROM MONTGOMERY: TREK BY BIGGEST CARAVAN

The staggering figure of 300,000 Sikh and Hindu refugees having moved within the past week from the Montgomery District into Indian territory was given on Tuesday to Pandit Nehru and Mr Liaquat Ali Khan by the military authorities when the two Premiers reached Montgomery travelling 102 miles by road, says a joint dispatch, dated September 2, from Press correspondents accompanying Pandit Nehru on his tour of the disturbed Punjab.

This caravan was perhaps the longest in history since at one time 150,000 persons were on the road spreading over 60 miles. A majority of them passed over the Sulaimanki bridge which was crossed by the refugees in 36 hours.

It is said that the moment this mass of refugees set foot on Indian soil they heaved a sigh of relief and some shouted *Azad Hindustan Zindabad.* This mass movement was mostly done by those who had bullock carts or animals for transport. Those who are to be carried by train number about 40,000 and are mostly in camps in Montgomery and Okara. When these are moved away within the next week or two, practically 90 per cent of the Sikh and Hindu population of Montgomery District would have moved into India.

According to military authorities there had been mass conversion of Sikhs and Hindus in certain areas and that several cases of abduction of women had occurred not only in villages but also while they were on the road to India. The casualties since the military took over were not more than 200.

Since the flare-up occurred on August 18 and lasted till August 29, the casualties occurred before the military took charge of the situation. According to civil authorities the total casualties are about 1,000 but a deputation of Congress leaders estimated them at 10,000.

3-Mile Long Procession

Pandit Nehru and Mr Liaquat Ali Khan were accompanied on Tuesday by Mr Karamat Ali, a Minister of the West Punjab Government. For about 40 miles they passed several

(Continued on page 7 col. 5)

जैसे-जैसे काफ़िलें चलते थे, उन गांवों से अधिक से अधिक लोग जुड़ते जाते थे। जहां से वे गुजरते थे, काफ़िलों की लंबाई बढ़ती जाती थी, जो 10 मील से 27 मील तक लम्बा फ़ैल जाता था, और इसमें हजारों की तादाद में लोग शामिल हो जाते थे।

East Punjab Situation

Muslims Pass Through Amritsar Safely

Hindu Village In Ambala Distt. Attacked

JULLUNDUR, Oct. 11.—No untoward incident was reported from nine out of thirteen districts of East Punjab, according to a communique issued here last evening.

Muslim refugee trains and foot convoys passed safely through Amritsar. Muslim soldiers, near cattle fair ground, Amritsar, robbed a Hindu of his purse.

Village Ganeshpur, in Ambala District, was attacked by Muslims, resulting in some casualties.

A Muslim caravan was fired at near Hissar but no casualty occurred.

The shooting of a Hindu lawyer at Gurgaon led to some minor incidents.—A. P. I.

भारत सरकार

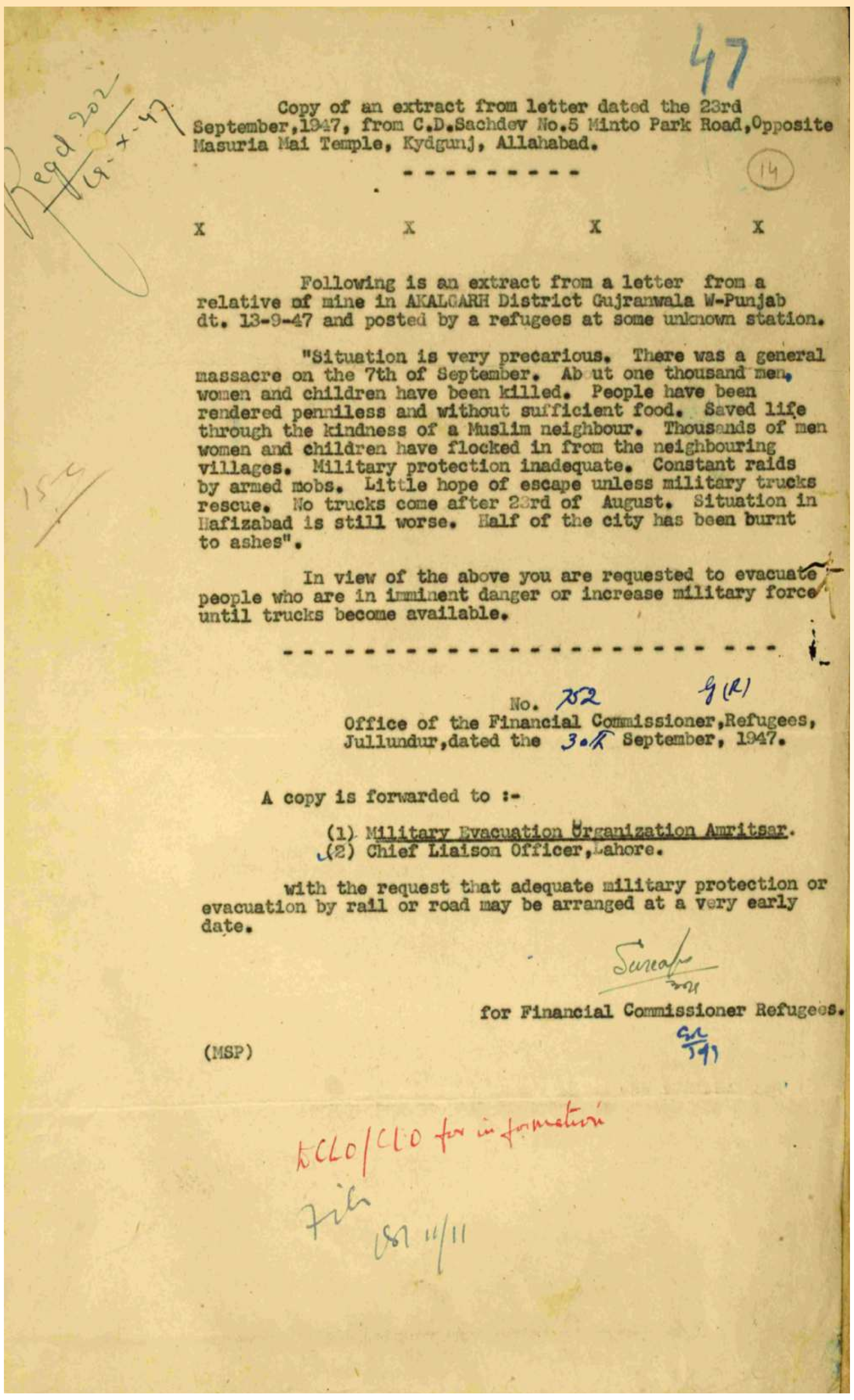

Copy of an extract from letter dated the 23rd September,1947, from C.D.Sachdev No.5 Minto Park Road,Opposite Masuria Mai Temple, Kydgunj, Allahabad.

- - - - - - - - - -

X X X X

Following is an extract from a letter from a relative of mine in AKALGARH District Gujranwala W-Punjab dt. 13-9-47 and posted by a refugees at some unknown station.

"Situation is very precarious. There was a general massacre on the 7th of September. About one thousand men, women and children have been killed. People have been rendered penniless and without sufficient food. Saved life through the kindness of a Muslim neighbour. Thousands of men women and children have flocked in from the neighbouring villages. Military protection inadequate. Constant raids by armed mobs. Little hope of escape unless military trucks rescue. No trucks come after 23rd of August. Situation in Hafizabad is still worse. Half of the city has been burnt to ashes".

In view of the above you are requested to evacuate people who are in imminent danger or increase military force until trucks become available.

- -

No. 752 g(R)
Office of the Financial Commissioner,Refugees,
Jullundur,dated the 30th September, 1947.

A copy is forwarded to :-

(1) Military Evacuation Organization Amritsar.
(2) Chief Liaison Officer,Lahore.

with the request that adequate military protection or evacuation by rail or road may be arranged at a very early date.

for Financial Commissioner Refugees.

(MSP)

1947 में हुई हिंसा की घटनाओं और बँटवारे की घोषणा के चलते
लाखों लोग रातों-रात अपने घरों से पलायन को मजबूर हो गए।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते

हिंसा का प्रारंभ

यह सब 4 मार्च 1947 को शुरु हुआ। पुलिस ने हिंदुओं और सिखों के एक जुलूस पर, जो बहुत बड़ा नहीं था और ऐसा प्रतीत होता है कि छात्रों के नेतृत्व में था, गोली चलाई। करीब 125 छात्र गंभीर रुप से घायल हुए थे तथा 10 छात्र, जो सभी डीएवी कॉलेज, लाहौर के थे, मारे गए थे।

6 मार्च की सुबह तक अमृतसर, जालंधर, रावलपिंडी, मुल्तान और सियालकोट समेत पंजाब के मुख्य शहर दंगों की लपटों में घिर गए थे।

रावलपिंडी दंगों में बचे कुछ भाग्यशाली लोग

रावलपिंडी के दंगे, मार्च 1947

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

SIMLA, FRIDAY, OCTOBER 3, 1947 — THE TRIBUNE — 3

2,000 Hindus and Sikhs Killed Near Tandlianwala

23,000 Persons Starving at Wah Camp

Military Trucks Attacked By Mob

17 KILLED: 16 INJURED

241 WOMEN ABDUCTED

(From Our Special Representative)

SIMLA, Oct. 1.—That 23,000 Hindus and Sikhs are almost starving at the Wah Camp without any hope of being evacuated, has been revealed by a reliable source at Simla. This information took about 12 days to travel from Wah to this place. It has been stated that the refugees at the Wah Camp had not been given ration since September 16 and an allegation has been made that a number of children died of starvation.

Another report stated that the refugees convoy that started from Risalpur in Military trucks was suddenly attacked by a mob near Khairabad, the first Railway station of the Frontier as one crosses the Attock Bridge. In this raid while 17 persons were killed and 16 seriously injured as many as 241 women are said to have been abducted. Nothing is known so far of these women and there is little hope of anything being made known because the present ministry in the Frontier seems to be unwilling to render any help to the minorities.

News has come from Charsada, a stronghold of the Red Shirts that while so far the Red Shirts had protected the lives of Hindus and Sikhs bravely it seems that goonda element is getting the upper hand. No harm has been allowed to be done to the Hindu and Sikh minorities by the Red Shirts.

It is however, learnt that there is immediate danger to the lives of ...

Refugee Convoy from Sargodha Side Attacked

(From Our Special Correspondent)

NEW DELHI, Oct. 2.—Reliable reports received from Amritsar indicate that on the 26th September 2,000 Hindu and Sikh refugees were killed in an attack near Tandlianwala, 25 miles West of Lyallpur. The escort opened fire on the raiders killing a small number. This refugee convoy was reported to be coming from Sargodha side.

Several other attacks on Hindu and Sikh convoys are reported from the West Punjab. At one place the District Magistrate was approached for help, but he declined to offer any help.

"This Communal Carnage Must Stop".—Nazimuddin

DACCA, Oct. 2.—The East Bengal Premier, Khwaja Nazimuddin, speaking at a social function, observed that the incidents in both East and West Punjab had completely paralysed the economic structure of the Society. "The Punjab is going to retard the progress of both the States for at least ten years. If such things happen in other places also, that will mean ruination of both the States economically, socially and morally."

Khwaja Nazimuddin said that this communal carnage must stop immediately and all parties should put their energies to remove suspicion and inspire confidence amongst the minorities. This was the only way to life.—U.P.I.

KAPURTHALA WELCOMES AGRICULTURAL REFUGEES

More Land Available in Hoshiarpur

(From Our Own Correspondent)

AMRITSAR, Sept. 30.—Mr. Nakul Sen, Deputy Commissioner, has received two communications from the Director-General of Rehabilitation, East Punjab, S. Tarlok Singh, until recently Personal Secretary to Pandit Jawaharlal Nehru, saying that Kapurthala State will welcome agricultural and other refugees in their territory and in particular refugees from Sialkot District and Shakargarh tehsil of the Gurdaspur district now gone over to Pakistan. The State will also welcome Virak Jats as settlers. Allotments will be made on the same basis as in the East Punjab, that is ten acres of land per family on a tenancy basis for the current Rabi harvest and the Kharif harvest of 1948.

In the second communication, he says that Hoshiarpur District has considerable vacant area and can take any other settlers besides its own colonists. In view of recent rains, it is very urgent to have the area settled as early as possible. Hoshiarpur will, therefore, welcome agricultural refugees from different districts at an early date.

50 Per Cent HOUSES DESTROYED AT FEROZEPUR

FLOODS SUBSIDE

60-Hour Continuous Rain At Hoshiarpur

From Our Staff Representative

JULLUNDUR, Oct. 2.—Flood water has now receded in Ferozepore city and cantonment.

Official circles are of the opinion that nearly 50 per cent of houses in Ferozepore have been pulled down by torrential water flow.

Thousands of cattle have also died and the crops have been damaged.

There is no communication with Ferozepore by rail or road.

Several shops and houses collapsed at Hoshiarpur, owing to heavy rains, which lasted 60 hours, without a minute's break. Four men died in Garhi Mohalla and the mohalla of Gama Beg.

An attempt was made to contact the authorities by wireless, but it failed. Damages to Ferozepore and surrounding rural areas by floods will seriously affect rehabilitation in East Punjab. About one lakh of refugees had already been settled in the villages and thousands in the cities. Most of them have been uprooted again due to dislocation in life and loss of their property.

Heavy floods have caused damage to Madhopur Headworks, say East Punjab Government reports. The loss is estimated at 12 lakh. Incessant rains have interrupted communications with police stations in Hoshiarpore, add Government reports.

Our correspondent at Ferozepore writes:

"Out of the frying pan into the fire, holds good of 90,000 Hindu ...

RAILWAY TRACK WASHED AWAY

Sequel To Serious Floods In Jumna River

SIMLA, Oct. 2.—Nearly 600 feet of railway track, both up and down ...

PAKISTAN'S APPEAL TO BRITAIN

DELICATE ISSUES

"Conflict Disaster For Both"

EAST PUNJAB GOVERNMENT PROMULGATES TWO MORE ORDINANCE

EAST PUNJAB UNIVERSITY

Ordinance Issued

45 FELLOWS TO BE NOMINATED

MOUNTBATTEN VISITS FLOOD AFFECTED AREAS IN DELHI

HOUSES COLLAPSE AT JULLUNDUR

LORD ISMAY FLYING TO LONDON

LIAQUAT ALI MEETS FRONTIER GOVERNOR

शरणार्थियों को न केवल सड़क पर हिंसा का सामना करना पड़ा, बल्कि वे सदी की सबसे भीषण बाढ़ में से एक के शिकार हुए। इस खतरनाक यात्रा में लोगों को भूख, बीमारी, थकावट और प्रकृति की कठोर परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उपमहाद्वीप के मूसलाधार मानसून को सहन करते हुए वे गीली दलदली भूमि और भारी वर्षा से गुजरे। 3 अक्टूबर 1947 को 'द ट्रिब्यून' अखबार के शिमला संस्करण का यह लेख उन शरणार्थियों पर भारी बारिश और बाढ़ के प्रभाव को दर्शाता है । लोग विकट परिस्थितियों से होकर पंजाब पहुंचे थे। पंजाब के कई शहर जैसे जालंधर और फिरोजपुर पानी से भर गए थे और परिणामस्वरुप, बिजली के बिना थे।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

रानाघाट, पश्चिम बंगाल में परिवहन की प्रतीक्षा में शरणार्थी।

पंजाब की तुलना में बंगाल में दशकों तक जारी विस्थापन और पुनर्वास का रूप अलग ही था। अधिकारियों ने संकट की भयावहता को कम करके आँका, और न सिर्फ शरणार्थियों को अपने घर लौटने के लिए प्रेरित किया, बल्कि पूर्वी बंगाल के विस्थापितों को किसी भी तरह की राहत देने से इनकार कर दिया।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

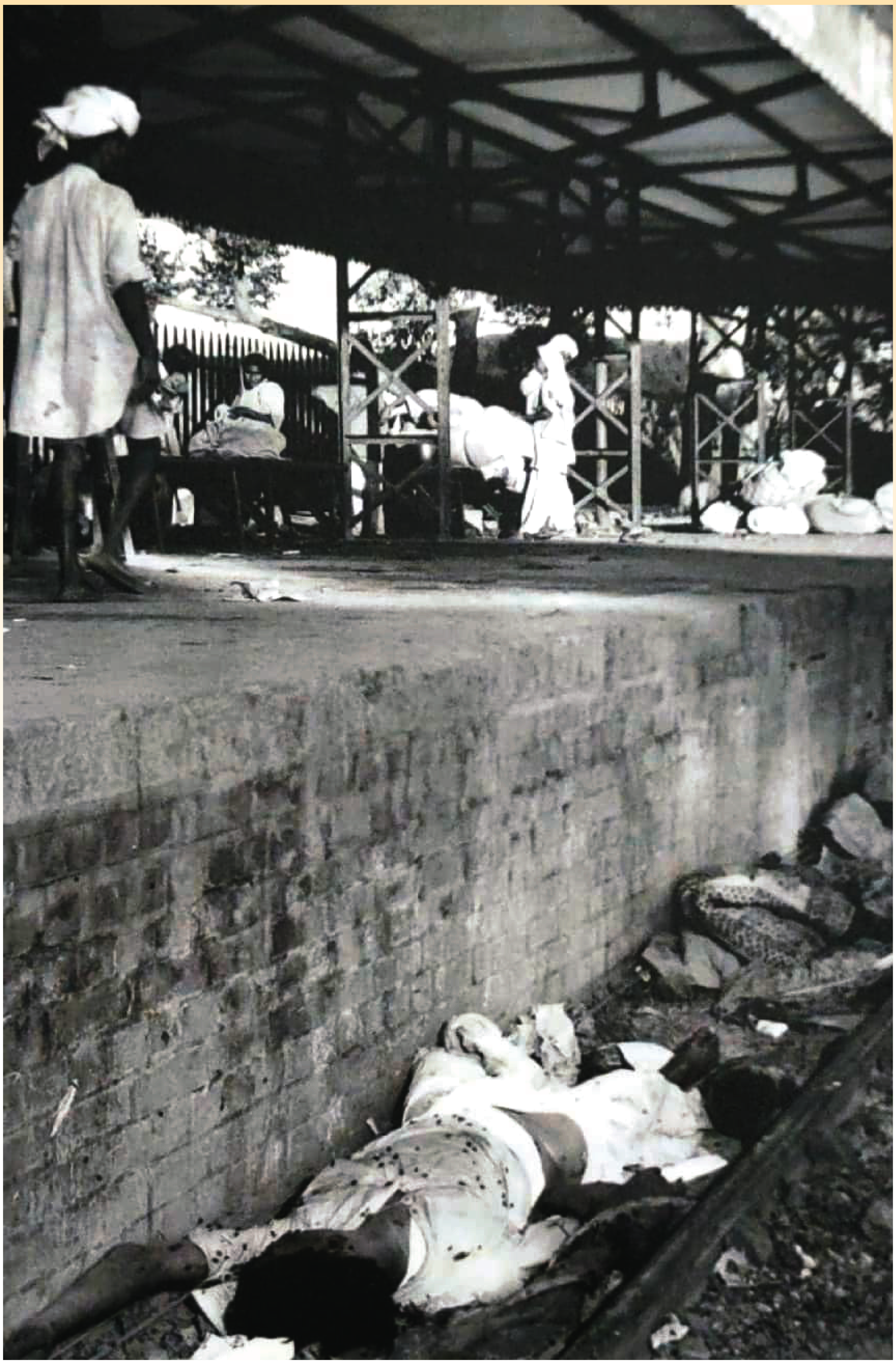

कभी पटरियों पर ख्वाब दौड़ाने के सपने थे,
पटरियों ने ही ख़्वाब का जहाँ छीन लिया !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

REGISTERED No. L. 4.

Editor's Office
(Liddell's Press)
Telephone No:- 556
Manager's Office
(Bantony)
Telephone No:- 646

The Sunday Tribune

"TRIBUNE" Office
at Bantony
Opposite Telegraph
Office.

VOL. LXVII. NO. 242 | SIMLA, SUNDAY, OCTOBER 12, 1947 | PRICE SIX PICE

10,000 HINDUS AND SIKHS IN DANGER AT JHELUM

PEOPLE STRANDED IN CITY: NO FOOD TO EAT

MUSLIM MOB ATTACKS CONVOY

700 PERSONS KILLED BY HOOLIGANS

(From Our Own Correspondent)

LUDHIANA, Oct. 11—Lives of 10,000 Hindus and Sikhs residing at present in Jhelum City are not safe and if immediate help is not given to them, they will be in great danger.

This information was given by a leading contractor of that place to the "Tribune" correspondent.

He further stated that their convoy of 2,400 Hindus and Sikhs left Jhelum on September 25 last, on which day thousands of Muslim hooligans, led by Baluch military men, attacked Hindus and Sikhs, who had no alternative except to die or fight bravely.

This contractor, continuing, said that Hindus and Sikhs fought bravely at that time and as a result two Baluch military men were shot dead.

Deaths of these Muslim military men enraged Muslim hooligans as well as other Baluchis, who were busy in helping hooligans in loot and murder. Then they attacked Hindus and Sikhs residing in a Muslim mohallah and in Gobind-pura, where Hindus and Sikhs suffered heavily.

It is estimated that nearly 700 Hindus and Sikhs were killed as a result of this attack.

Cash, ornaments and property worth lakhs of rupees were looted by Muslim hooligans from these mohallas. This contractor, concluding, said that all Hindus and Sikhs are confined to their houses in Jhelum city and they have nothing to eat.

द सन्डे ट्रिब्यून, अक्टूबर, 1947

The Tribune

Editorial Staff
Telephone No:- 556

VOL. LXVII. NO. 226 | SIMLA, FRIDAY, SEPTEMBER 26, 1947 | PRICE ONE ANNA

500,000 Hindus & Sikhs Held Up

West Punjab Govt. Stops Movement Of Convoys To India

MUSLIM REFUGEE TRAINS ALSO STRANDED

SETBACK TO EVACUATION OF PEOPLE IN DISTRESS

(From Our Staff Representative)

JULLUNDUR, Sept. 25.—The West Punjab Government ... orders suspending all evacuation of Hindus and ... from West Punjab to East Punjab.

According to a Lahore report, it is stated that trains carrying Muslim refugees to Pakistan are also held up in East ...

Stray Assaults on Hindus & Sikhs

LAHORE, Sept. 25—Reports of three stray assaults on Hindus and Sikhs have been received ... One person was killed in ... Another person was fatally stabbed in ... A pedestrian was assaulted in Nila Gumbad area. The victim was removed to hospital.—A.P.I.

Exchange Of Population

LAHORE, Sept. 25.—A press note issued by the West Punjab Government gives the following figures of exchange of Muslims and Hindus and Sikhs in the following districts as the result of present disturbed conditions prevailing in those parts of the country:—

MONTGOMERY: 3,25,000 Sikhs and Hindus evacuated and 4,50,000 Muslims settled.

LYALLPUR: 1,25,000 Sikhs and Hindus evacuated and ... Muslims settled.

SHEIKHUPURA: 3,50,000 Sikhs and Hindus were evacuated and 2,50,000 and 4,75,000 Muslims settled.

SIALKOT: 1,25,000 Sikhs and Hindus were evacuated and 2,15,000 Muslims settled.—U.P.

340 Sikhs and Hindus killed, 250 wounded

West Punjab Govt. Announcement

LAHORE, Sept. 25—A Muslim mob of several thousand strong, attacked a Sikh-Hindu refugee train at Kamoke, about 25 miles West of Lahore about noon yesterday, killing 340 Sikhs and Hindus and wounding 250, the West Punjab Government announced to-day.

Escorting troops killed 78 attackers and wounded about the same number but, despite heavy fighting by the escort, the mob attacking from the rear forced its way into the last four bogies. The attack lasted 40 minutes. The train was returned to Gujranwala where the wounded were removed to hospital.—A.P.I.

E. PUNJAB SITUATION

Village Attacked By Muslim Mob

Gurdaspur Distt. Incident

ILLICIT WEAPONS RECOVERED IN KARNAL DISTT.

JULLUNDUR, Sept. 25—General improvement in the situation is being maintained, says a communique ...

द ट्रिब्यून, 26 सितंबर, 1947

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

घबराहट, डर और हिंसा

विभाजन के दौरान सिन्ध के अल्पसंख्यकों (हिन्दू एवं सिख) को जितनी विकराल एवं भयावह त्रासदी सहनी पड़ी, उसका कटु अनुभव सिन्ध छोड़कर आए लोगों के मन में आज भी जीवन्त है। 17 दिसम्बर 1947 को सिन्ध के हैदराबाद तथा 06 जनवरी 1948 को राजधानी कराची में हुए भयावह दंगों ने अल्पसंख्यकों को इस हद तक भयभीत कर दिया था कि नवम्बर 1947 तक 2,50,000 लोग, जनवरी 1948 तक 4,78,000 तथा जून 1948 तक 10 लाख से अधिक लोगों को सिन्ध छोड़कर जाना पड़ा।

Panic Abates In Karachi

KARACHI, January 19: The Indian High Commissioner in Pakistan, Mr. Sri Prakasa, reviewing the situation in Karachi, said today that the panic in the city was abating, but it seemed to be increasing in the interior of the province "from where we are receiving urgent messages asking us to make arrangements for the evacuation and transport of Hindus. We are keeping in touch with the Government there in regard to facilities for bringing them to Karachi for evacuation".

"We have chartered the entire deck passage of the Bombay Steam Navigation Company for Kathiawar ports and of the British India Steam Navigation Company for Bombay.

"We have so far cleared 25,000 persons and expects to clear another 15,000 within the next few days. There are eight transit camps in Karachi where ...,000 persons are awaiting passage".—A.P.I.

कराची में दहशत कम हो रही थी, लेकिन सिंध प्रांत के अंदरूनी हिस्सों में यह बढ़ती दिख रही थी।

- श्री प्रकाश, पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त, टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 20 जनवरी, 1948

DAWN

Founded by Quaid-i-Azam Mohammad Ali Jinnah

Curfew extended till 8 a m on Friday: 9 looters shot dead by police: over 1000 arrested

Sikhs' arrival in city without information was cause of trouble

Hindus taken to safe places: soldier and policeman arrested: Khuhro and Raza tour city

Khuhro sees Quaid-i-Azam

Tojo admits he advised Hirohito to declare war

कर्फ्यू के बाद भी कुछ घरों को लूटने की कोशिश।

पाकिस्तान सरकार ने भारत को अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का आश्वासन दिया था, लेकिन वास्तविक तस्वीर कुछ और थी। 'आज' अख़बार, 17 जुलाई 1947

DAWN

Founded by Quaid-i-Azam Mohammad Ali Jinnah

Ajmer events cause flare-up in Hyderabad: 27 killed, 16 injured on Wednesday

Twenty-hour curfew imposed: situation under control: Sind Premier visiting city today

Sind faced with deficit Budget: great fall in excise and land revenues

Speculations on Arab League acceptance of modified partition plan

हैदराबाद (सिंध) में 27 लोग मारे गए और 16 घायल हुए।
डॉन (कराची), 19 दिसंबर 1947

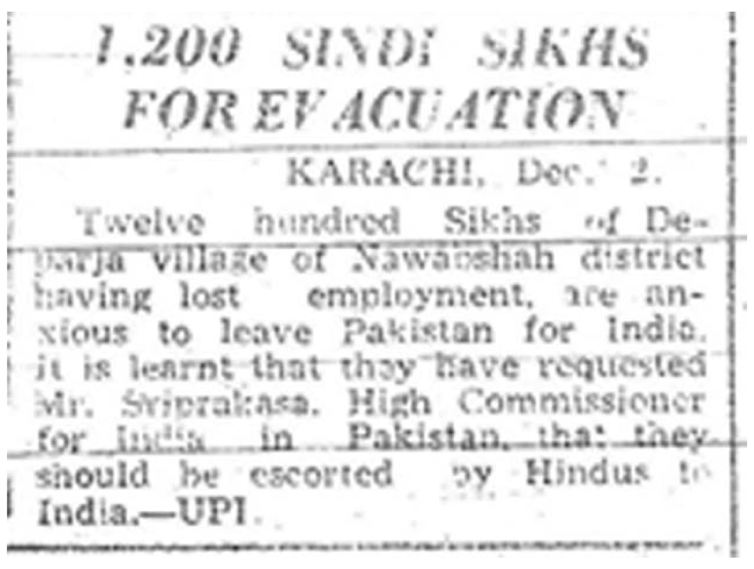

1,200 SINDI SIKHS FOR EVACUATION

KARACHI, Dec. 2.

Twelve hundred Sikhs of Degarja village of Nawabshah district having lost employment, are anxious to leave Pakistan for India. it is learnt that they have requested Mr. Sriprakasa, High Commissioner for India in Pakistan, that they should be escorted by Hindus to India.—UPI.

पहरे में भारत भेजने का अनुरोध किया।
-द पॉयनियर

सिन्धके हिन्दू खतरेमें

शीघ्र स्थानान्तरण किया जाय

हिन्दू पंचायतके मन्त्रीका वक्तव्य

कराची, १० जनवरी। अखिल भारतीय हिन्दू पञ्चायत संघके मन्त्री श्री ... ने एक वक्तव्यमें बताया कि सिन्ध की स्थिति यह है कि वहांके हिन्दुओंको सुरक्षित रूपसे शान्ति पूर्वक वहां अपना जीवन व्यतीत करना असम्भव हो गया है। अतः सिन्ध सरकारको तुरन्त उन लोगोंको बाहर जानेके लिए सुविधाएं देनी चाहिये जो सिन्धसे बाहर जाना चाहते हों और इस कार्यके लिए रेल और जहाज के अधिक यातायातकी व्यवस्था करनी चाहिये। इस सम्बन्धमें पाकिस्तान सरकार को भारत सरकारके साथ पूरा सहयोग करना चाहिये।

आज, वाराणसी, 13 जनवरी 1948

१२२ मरे २१९ घायल

कराचीकी स्थिति अब काबूमें

कराची में 6 जनवरी, 1948 को हुई सांप्रदायिक हिंसा में 122 लोग मारे गए और 219 घायल हुए।
आज, 10 जनवरी, 1948

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

मुंबई (तब बंबई) में बंदरगाह पर नए घरों की ओर जाने के इंतजार में शरणार्थियों की भीड़।

सिंध से आने और जाने वाले लोगों का एक बड़ा हिस्सा ऐसा था, जिसने कराची और मुंबई (तब बंबई) के बीच पानी के जहाज से अपना सफ़र तय किया था। भारत सरकार ने शरणार्थियों की आवाजाही के लिए नौ स्टीमर लगाए। पर्शियन गल्फ़ लाइन के स्टीमरों ने भी मुंबई तक के अपने सफ़र के दौरान कराची में रुक कर लोगों को साथ लिया।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

ट्रेनों में खाली जगह के लिए संघर्ष करते शरणार्थी।

बँटवारे के समय भारत और पाकिस्तान के बीच पलायन करने वाले लोगों ने रेलगाड़ियों का व्यापक रूप से उपयोग किया था। भारत और पाकिस्तान के बीच आपसी परामर्श से रेल सुविधा को जारी रखा गया था। हर दिन 5-6 ट्रेनें दोनों ओर से चलती थीं। ऐसी कई डरावनी कहानियाँ भी हैं, जिनमें रेलगाड़ियाँ जब अपने अंतिम गंतव्य स्थान पर पहुँचीं तो उनमें केवल लाशें और घायल व्यक्ति ही मौजूद थे।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

PUNJAB NEWSLETTER

WOMEN JUMP INTO WELL TO AVOID CAPTURE

FROM OUR STAFF CORRESPONDENT

The story of 90 women of the little village of Thoha Khalsa, Rawalpindi District, who drowned themselves by jumping into a well during the recent disturbances, has stirred the imagination of the people of the Punjab.

They revived the Rajput tradition of self-immolation when their menfolk were no longer able to defend them. They also followed Mr Gandhi's advice to Indian women that in certain circumstances even suicide was morally preferable to submission.

Thoha Khalsa, situated at the foot of a hill, until recently belonged to members of a minority. It was small, prosperous and pretty.

About a month ago, a communal army 3,000 strong, armed with sticks, tommy guns and hand grenades surrounded it. The villagers defended themselves as best they could. They had two guns which they put to good use. But in the end they had to raise the white flag.

Negotiations followed. A sum of Rs 10,000 was demanded by the besiegers. It was promptly paid. The intruders gave a solemn assurance that they would not come back. The promise was broken the next day.

They returned to demand more money and in the process hacked to death 40 of the defenders. Heavily outnumbered, they were unable to resist the onslaught. Their women held a hurried meeting and came to the conclusion that all was lost except their honour. Following the example of Indian women of bygone days, they decided to evade inglorious capture. Ninety women jumped into a small well. Only three were saved. There was not enough water in the well to drown them all.

विभाजन के दौरान महिलाओं को भारी नुकसान उठाना पड़ा, और विभाजन एवं उसके आघात का उनका अनुभव पुरुषों से बहुत अलग था। उनका अपहरण किया गया और उनके साथ बलात्कार किया गया। कई को वेश्यावृत्ति वालों के हाथों बेच दिया गया। बहुतों को अपना धर्म बदलने और उन्हीं पुरुषों से शादी करने के लिए मजबूर किया गया, जिन्होंने शायद उनके परिवार का वध किया हो। इसके अलावा, उनके अपने परिवार के सदस्य अक्सर 'परिवार के सम्मान को बचाने' के लिए उन्हें मारने की कोशिश करते थे। भारत सरकार ने 33,000 महिलाओं के अपहरण की सूचना दी, जबकि पाकिस्तान सरकार ने 50,000 महिलाओं के अपहरण का अनुमान लगाया। लेकिन इन आँकड़ों ने पीड़ा की सीमा को बहुत कम करके आंका।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

THE TRIBUNE

Trace Out And Restore Abducted Women

Future Of Country And Nation At Stake

—Rajen Babu

NEW DELHI, Feb. 18.—Broadcasting from Delhi last evening in connection with the "Abducted Women's Week", Dr. Rajendra Prasad, the Congress President, said that it was the most urgent duty of every Congressman to give all assistance in the task of tracing out and restoring abducted women.

What had happened in India and Pakistan in the recent past was enough to disgrace the name of any country specially of this sub-continent whose people had the reputation of being men of peace, said Dr. Rajendra Prasad. Abducting a woman during a period of unrest was a great sin but not restoring that woman even when peace was established was a much greater sin. It was decided to hold this week so that the abducted women could be traced out in both the dominions and sent back to their homes and people, and the Congress President hoped that all possible help and co-operation would be forthcoming from the public.

Women had always held a place of honour in the Indian social life and what had happened recently was a complete negation of their past traditions, he added. The future of the country depended on how they would treat their women and how much respect they would show them. "If women of India are not given due respect, it would only mean ruin of the country and the nation" Dr. Rajendra Prasad said.

He appealed to the people to work for this cause with honesty of purpose and help in restoring all abducted women irrespective of the community or province to which they belonged.—A.P.I.

MORE THAN 12,000 ABDUCTED WOMEN NOW RECOVERED

Reports received from East Punjab regarding the recovery of abducted women indicate that from December 6 to May 8, the number of Muslim women recovered from East Punjab and East Punjab States is 8,088. Non-Muslim women recovered from Western Pakistan number 4,091.

डॉ राजेन्द्र प्रसाद

'अशांति के काल में स्त्री का अपहरण बहुत बड़ा पाप था लेकिन शांति स्थापित होने पर भी उस स्त्री का पुनर्वास न हो पाना कहीं अधिक बड़ा पाप था'

SIMLA, TUESDAY, FEBRUARY 17, 1948

RECOVERY OF ABDUCTED WOMEN AND CHILDREN

Inter-Dominion Machinery To Be Set Up

NEW DELHI, Feb, 16.—It is understood that a suitable machinery is being set up to implement the decisions of the inter-dominion conference for the recovery of women and children in the states concerned who have acceded

work to the United Council of Relief and Welfare of which she is the head.

A conference of state representatives of Patiala, Nabha, Faridkot, Kapurthala, Simla States, Bharatpur, Alwar and

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

सबसे बड़ी संख्या में लोगों ने काफ़िलों में पलायन किया। उस दौरान उन्होंने न सिर्फ़ प्रचंड गर्मी झेली, बल्कि मानसून की मूसलाधार बारिश में भी मीलों-मील पैदल चलते रहे। जैसे-जैसे काफ़िला आगे बढ़ता जाता था, उसमें उन लोगों की संख्या भी जुड़ती जाती थी, जो रास्ते में पड़ने वाले गाँवों की होती थी। इन काफ़िलों की लंबाई 10 मील से लेकर 27 मील तक हुआ करती थी, जिनमें हज़ारों-हज़ार लोगों की तादाद होती थी।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

भारत के विभाजन के बाद शरणार्थियों का एक दृश्य। कुछ ट्रक में, कुछ तांगों और बैलगाड़ियों पर, अन्य काफिलों में पैदल चलते हुए।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

बंगाल में लोगों के दैनिक जीवन में जलमार्ग की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वहां लोगों ने पलायन के दौरान नावों का व्यापक रूप से उपयोग किया।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

TROOPS BEAT OFF MOB ATTACK ON VILLAGE NEAR DELHI

MISCREANTS SNIPE FROM HOUSES IN DARYAGANJ, ESCAPE

STRAY STABBING CASES IN BABAR ROAD AREA

(By Our Special Correspondent)

NEW DELHI, Saturday.—There was recurrence of trouble in the Daryaganj area this evening when some Muslim rioters entrenched themselves behind a house and a mosque in the Faiz Bazar area and began firing on passersby.

One person was killed and two were injured. The police and the military took immediate action, overcame opposition and occupied the house. The rioters beat a hasty retreat through a back-lane. A military picket has been stationed in the area.

The police today carried out a number of searches to recover arms and ammunition illegally held. A Muslim house on Barakhamba Road and another on Keeling Road were searched this morning by the police aided by the military. Some weapons are reported to have been recovered, and in one Muslim house a number of guns were found against licences issued by the N.-W.F.P. Government.

A shot was fired on the occupants of 6 Keeling Road today, but the identity or the community is not known. This house has been occupied by a refugee family from Lahore. The bullet hit the window glass pane. The police is investigating the incident.

ये काफ़िलें विशेष रूप से भीड़ के हमले की चपेट में थे। लोग बिना आश्रय, स्वच्छता, भोजन या पानी के बिना चले रहे। इस कारण हजारों बुजुर्ग और बच्चे थकावट, भुखमरी और बीमारी से मर गए।

4

Letters To The Editor

PATHETIC PLIGHT OF ABDUCTED GIRLS

A lot of talk is going on both in the press and on the platform regarding the plight of abducted girls who have been the victim of inhuman aggression on both sides of the Indo-Pakistan border. This talk is of little use so long as speedy success does not attend our efforts to recover these unhappy sisters.

It is an open secret that the Pakistan authorities are not co-operating in this matter and have no intention to restore our girls. This is evident from the following facts:

(i) The relative numbers as put out by the Pakistan's highest officials are grossly exaggerated.

(ii) Pakistan is denying access to our officers to N.-W.F.P., Rawalpindi, Jhelum and Gujrat. These are exactly the areas to which Hindu and Sikh girls have been taken away.

(iii) The number of victims handed over by Pakistan is in the first place very small. Secondly, very few young girls have been recovered.

(iv) There are harrowing tales of young girls being sold as slaves in the Frontier Province.

POSTPONING THE AGONY

The East Punjab University Syndicate has decided to postpone the examinations of the "1947 candidates". It has really come as a shock to those students who were thinking of adopting some means to earn our livelihood, after having taken the examinations. But now they will have to wait for their examinations.

To us the examinations are nothing but a long standing agony, which we wish to end as soon as possible. Let us be assured that the examinations will not be postponed any further.

INDERJEET.

Jubbulpore.

'पाकिस्तान द्वारा सौंपे गए पीड़ितों की संख्या बहुत कम है। दूसरे बहुत कम युवतियों को खोजा गया है। सीमांत प्रांत में युवा लड़कियों को दास के रूप में बेचे जाने की दर्दनाक दास्तान है।'

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

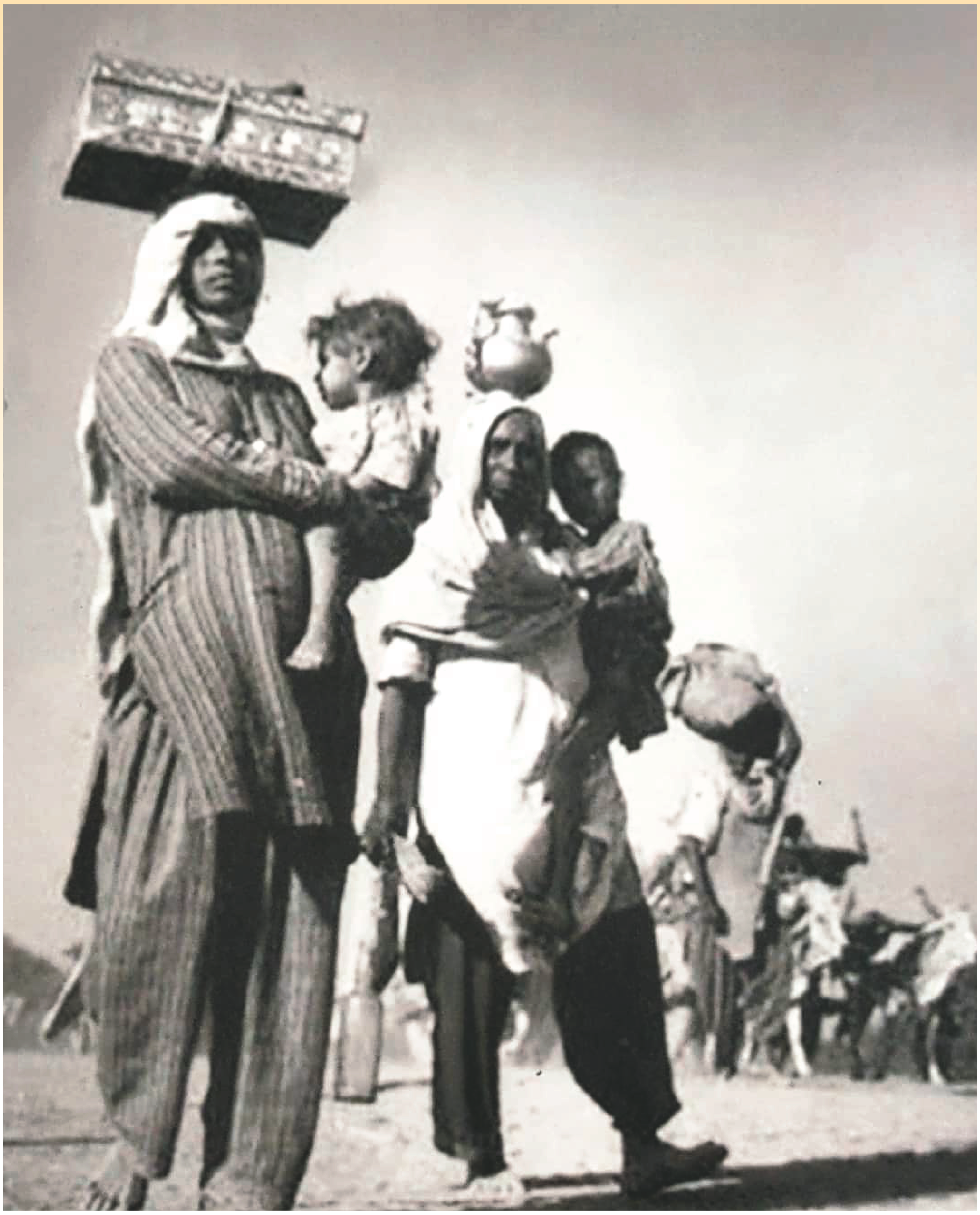

ऐसा भी क्या ख़ास था हमारे हिस्से की ज़मीन में
जिसे हासिल के लिए हमसे हमारा सब छिन गया !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

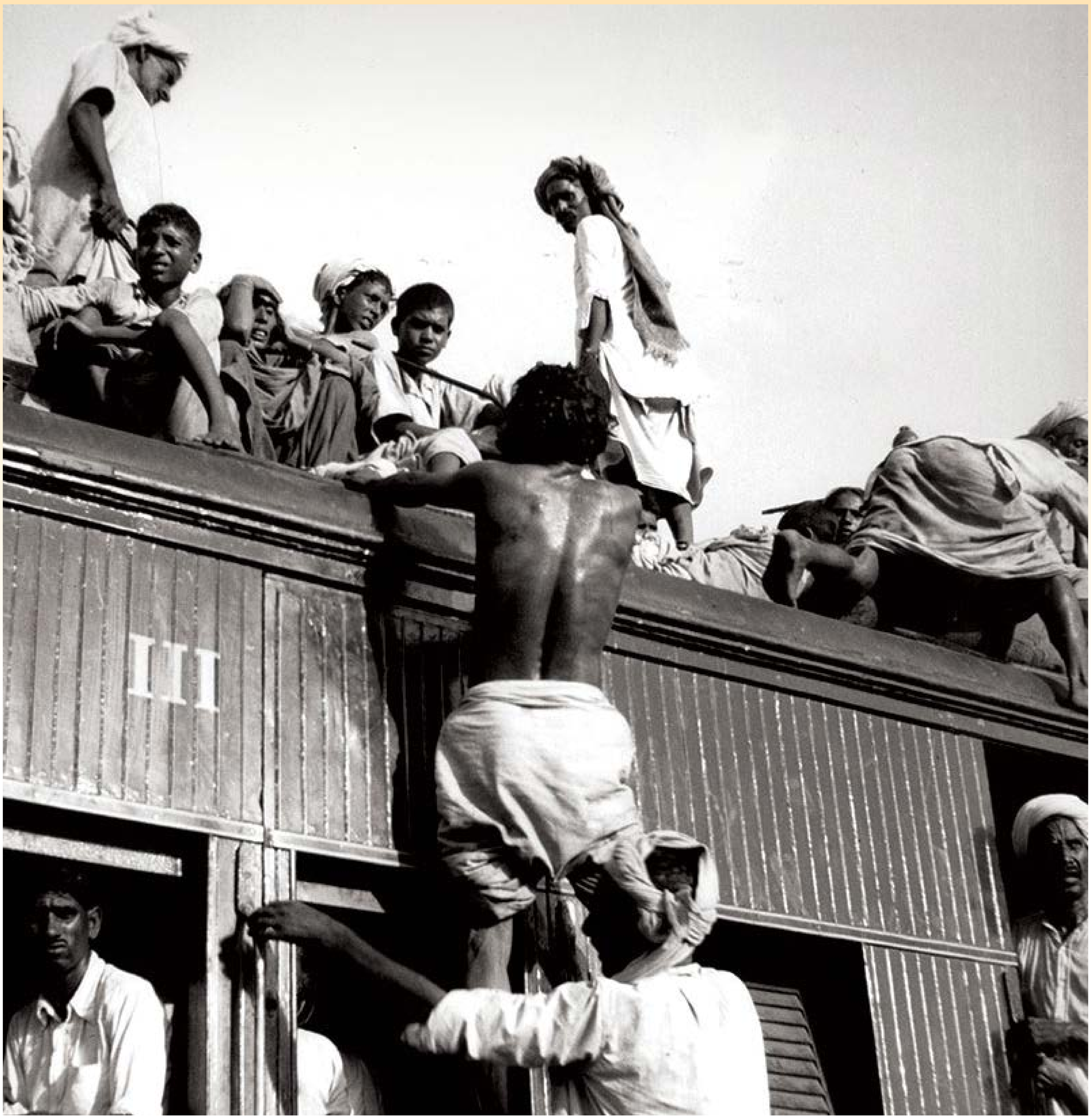

जीवन के लिए संघर्ष

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

अनिश्चितताओं का बोझ

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

जहाँ जीवन की हर सुबह मुस्कान से पुलकित हो उठती थी,
वहां का मंज़र देख आँसू भी खून हो गए !

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

एक ओर लोहे की पटरी, एक ओर इंसानों की
मंज़िल भी एक और सफ़र बदहाल !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

तब दिखे श्रवण कुमार भी !!

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

कभी यहाँ बाज़ार आबाद हुआ करते थे
आज खंडहर पनाह भी नहीं दे पा रहे !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

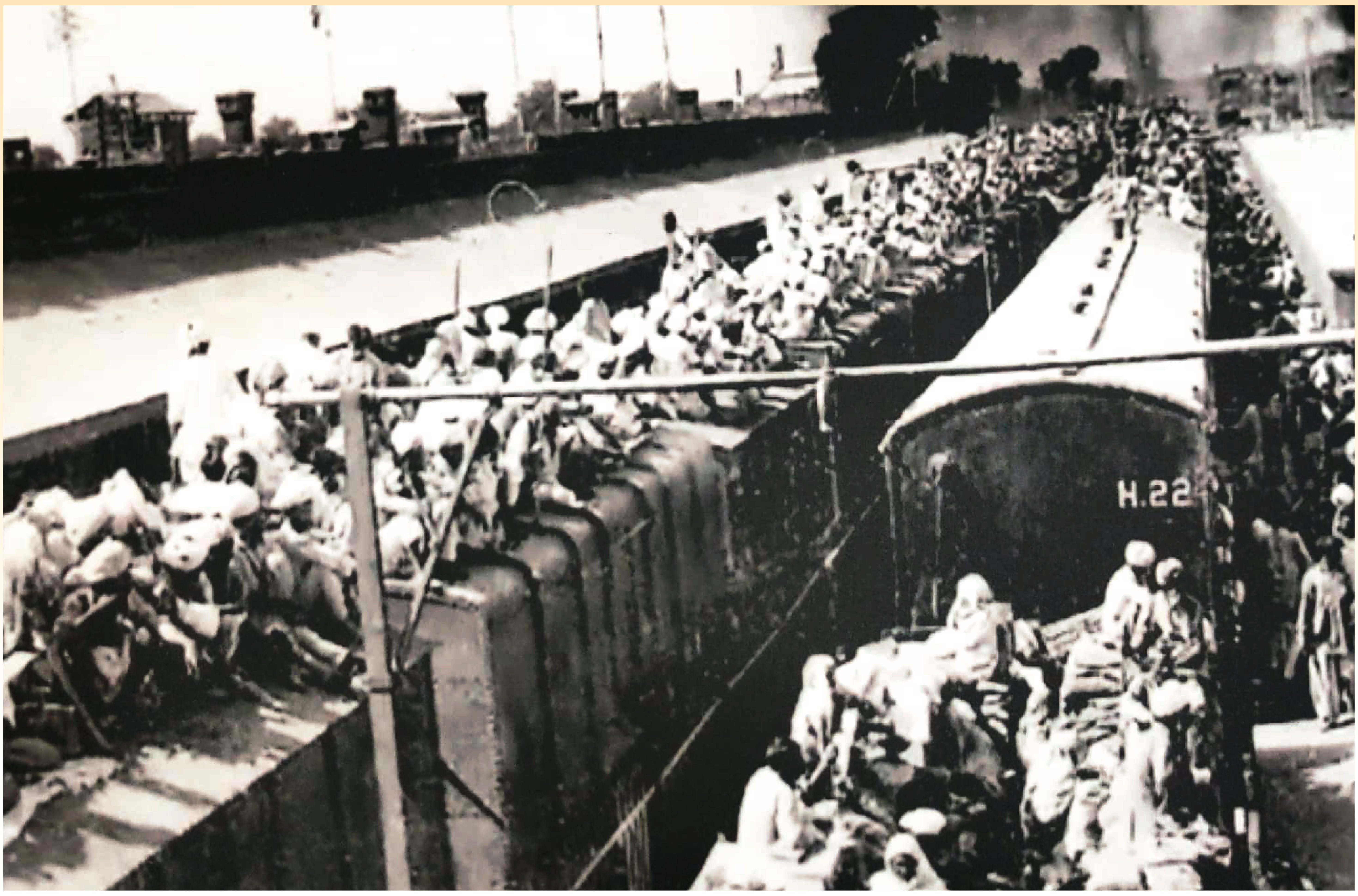

रेल ने उठाया विभाजन का भार !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

बरसों खेती की है, पर आज रोटी देख कर आँसू आ गए !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

न है ज्यादा दर्द तेरे भार का कंधे पर
जब तोलता हूँ, उसे दहशत, जंग और क्रूरता से !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

छुक-छुक करते पीछे छुट गई परम्पराएँ, विरासत,
अधिकार और रिश्तेदारी !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

नई शुरुआत की उम्मीद में आखिरी ट्रेन पकड़ने की जद्दोजहद !

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

कौन किसका चाचा, कौन मामा
बस दो सूखी रोटी और पानी एक प्याला !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

शरण

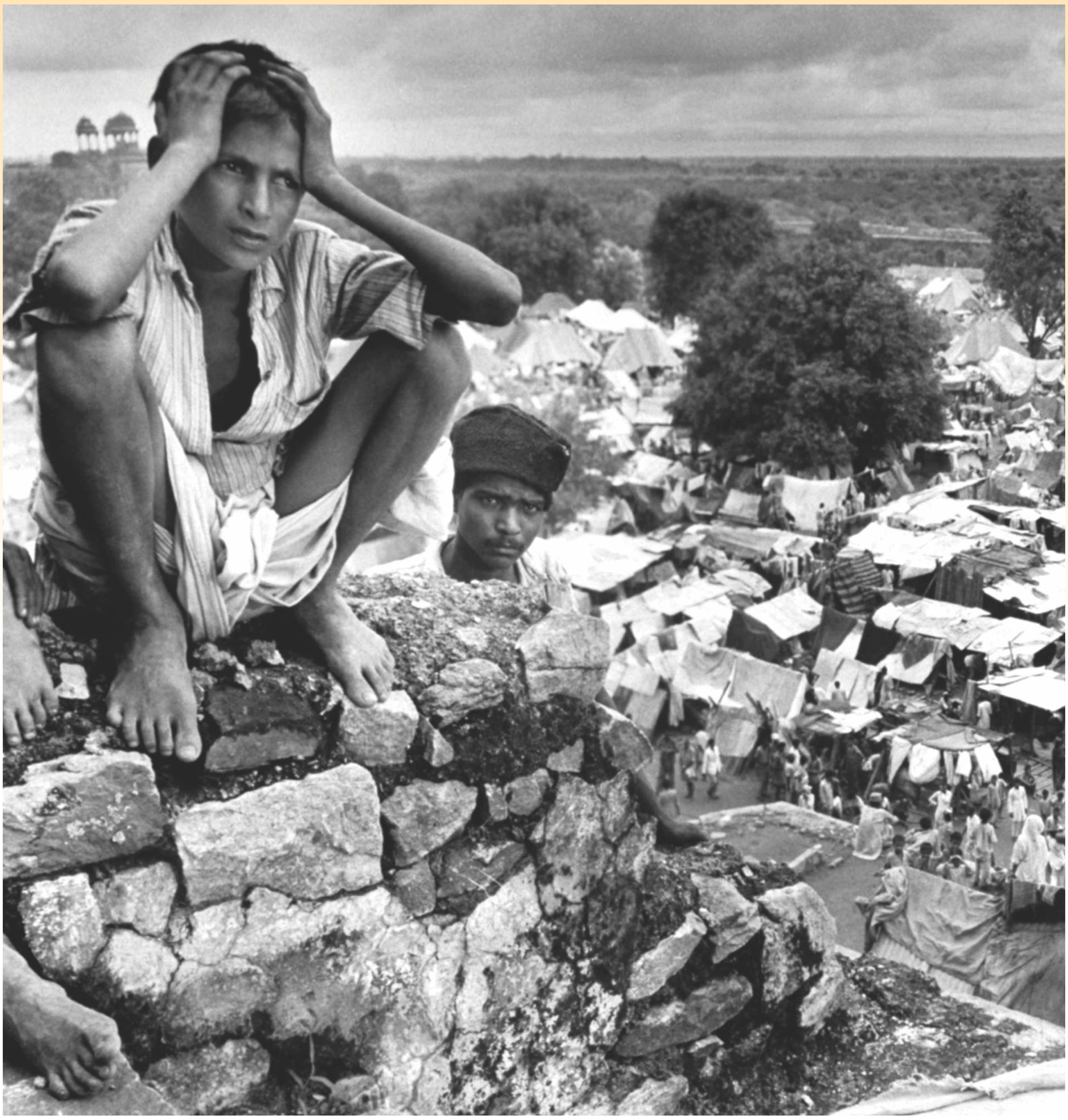

भारतीय उपमहाद्वीप में लोगों का बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ। इसके परिणामस्वरुप लाखों शरणार्थियों ने उन प्रांतों और शहरों में अपना बसेरा स्थापित किया, जिनके साथ पहले से उनका कोई संबंध नहीं था। परिवार, संस्कृति या भाषा की दृष्टि से भी वे एक समान नही थे। ऐसे में उन्हें अपनी ज़िंदगी नए सिरे से शुरू करनी पड़ी।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

कभी रहती थीं विरासतें, परम्पराएं और साज सज्ज़ा के अलंकार
आज बस रह गया देह छुपाने का कपड़ा और अनिश्चित संसार !!

दर्द ख़ूब दिखा होगा उन बेबस आँखों में, जो अपने
आबाद आशियाने को बिखरा देख मरहम लगाने चल पड़े !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

पानी...!! जो न हिन्दू को जानता है न मुसलमान को !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

FOOT CONVOYS MOVING TOWARDS INDIA

REWARI CLEAR OF MUSLIM REFUGEES

A military spokesman said on Friday that more non-Muslim foot convoys are moving towards India. Column No 20, now 64,550 strong with 1,549 bullock-carts, is moving towards Manga. This column has been joined by another convoy of 5,000 from Nankana Sahib.

At Manga, Column No 19, 50,000 strong, is expected to join Column No 20 before moving into India. Column No 21, nearly 60,000 strong, passed Balloki Head on October 22. Column No 22, nearly 30,000 strong, passed the headworks on Thursday.

A non-Muslim foot convoy, 15,000 strong, has arrived at Tandlianwala from Awagat, and another column, 25,000 strong, has arrived at Awagat from Marwala.

द ट्रिब्यून, 26 सितंबर, 1947

REFUGEE CAMPS IN W. PUNJAB

CONDITIONS UNSATISFACTORY

LAHORE, Oct. 11.—Sardar Sampuran Singh, Deputy High Commissioner for India in Pakistan, who left Lahore on October 8 on a tour of Lyallpur, Chiniot, Lallan and Sargodha returned to Lahore yesterday. He visited refugee camps at all these places to see for himself the conditions which generally were not satisfactory, states a Press Note issued by the office of the Deputy High Commissioner for India in Pakistan, Lahore.

The Press Note adds: "There is scarcity of food and the sanitary conditions everywhere need improvement.

The provision of non-Muslim guards for some of these refugee camps, where it does not exist, is considered most essential.

Dr. Lehna Singh, District Liaison Officer, Sargodha, met Sardar Sampuran Singh and apprised him of the conditions in the refugee camps at Darya Khan, Bhakhar and Mianwali.—A.P.I.

Kripalani's Advice to Workers

BOMBAY, Oct. 11.—An advice to the workers to follow the ideals of truth and non-violence of Mahatma Gandhi, to abstain from unnecessary strikes and follow the guidance of nation's leaders, was given by Acharya J. B. Kripalani, the Congress President, addressing a workers' meeting this morning.

Acharya Kripalani added that the Congress had placed the interest of the nation above sectional interest which was the only way of establishing Kisan Raj in the country.

The Congress President also addressed a meeting of Congress workers at Jinnah Hall today, held in celebration of Gandhi Jayanti.—A.P.I.

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

पश्चिम बंगाल सरकार ने चटगांव, नारायणगंज, बारीसाल और चांदपुर से शरणार्थियों को कलकत्ता लाने के लिए पंद्रह स्टीमरों की व्यवस्था की। जिन अन्य तरीकों से शरणार्थियों ने बंगाल की सीमा पार की, उनमें बंगाल में चलने वाली ट्रेनों के साथ खुलना-गोलैंडो यात्री ट्रेन भी थी। अखबार की इस रिपोर्ट में स्टीमर 'मल्लार्ड' को नारायणगंज से शालीमार घाट पर पहुंचते हुए दिखाया गया है।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

कभी मेलों में दिखती थी ऐसी अनजानों की भीड़
आज रोटी और पनाह देने वाले रिश्तेदार बन गए !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

STEADY MOVEMENT OF REFUGEE CONVOYS

SPECIAL TRAIN SENT TO KASUR TO EVACUATE NON-MUSLIMS

(By Our Special Correspondent)

"Movement of refugees from the East Punjab to Pakistan and also in the opposite direction is going on steadily and well. The trains are moving with greater regularity and military motor transport as well as civilian motor lorries which have volunteered for this work are evacuating refugees from both sides," declared a military spokesman at a Press conference in New Delhi on Saturday.

The military spokesman, however, added that it was obvious that railways and motor transport would only make a very small bite on the problem of evacuating refugees, which in the ultimate analysis would have to be tackled by route marches. Quite big movements of refugees on foot in both directions had already taken place and further big movements were being mounted.

There had been some attacks on refugee convoys but in general this vast movement of refugees was going on without any incident. A convoy of refugees proceeding to Tarn Taran had been attacked but the troops had taken action and the attackers had been dispersed.

About 15,000 refugees had moved to Kasur under escort. A special train was being sent to Kasur to evacuate non-Muslim refugees.

Arms and ammunition had been recovered in Qadian where 4,000 Muslims had moved in.

Two cases of small-pox had been reported from a non-Muslim refugee camp in [illegible].

In Amritsar Muslim refugees were being moved in motor transports to Pakistan.

Looting In Sialkot

Looting and arson is continuing in Sialkot. A non-Muslim refugee train was stopped here but troops fired on the attackers and the train proceeded to India via Narowal.

In Lahore 5,000 refugees still re-

"पूर्वी पंजाब से पाकिस्तान और विपरीत दिशा में शरणार्थियों की आवाजाही लगातार और अच्छी तरह से चल रही है। ट्रेनें अधिक नियमित ढंग से आगे बढ़ रही हैं और सैन्य मोटर परिवहन के साथ-साथ नागरिक मोटर लॉरी भी हैं, जो इस काम के लिए स्वेच्छा से शरणार्थियों को, दोनों तरफ से निकाल रहे हैं।"

- द हिन्दुस्तान टाइम्स वीकली
(रविवार, 14 सितम्बर, 1947)

कुछ ऐसा मंज़र था, जान पर खेलता हुज़ूम खड़ा था !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

उम्मीद

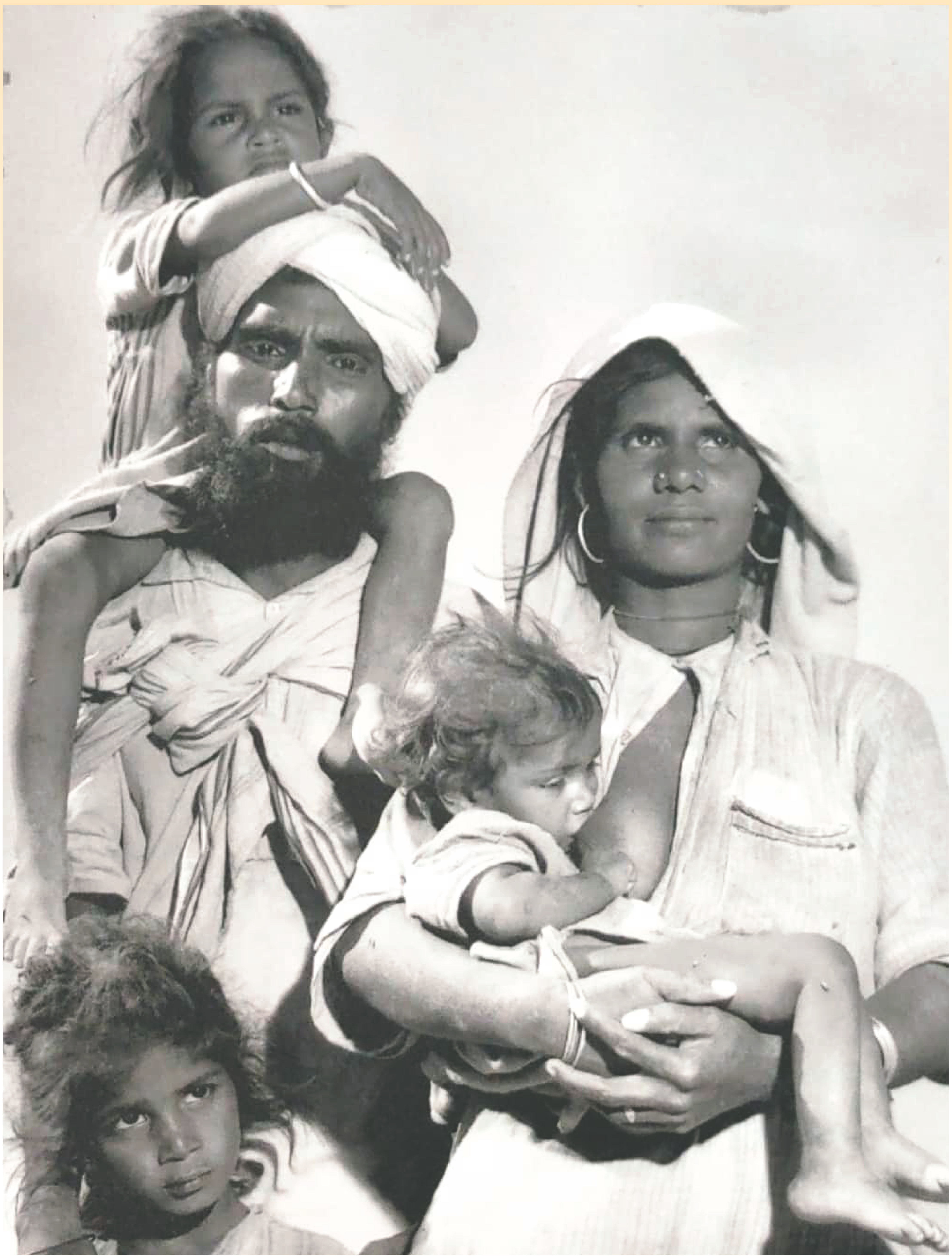

सीमा के उस पार बनाएँ एक नया संसार
चलो एक नई शुरुआत करते हैं !!

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

FAITH IN GOVERNMENT ESSENTIAL FOR PEACE

GANDHIJI ASKS PEOPLE NOT TO TAKE LAW INTO OWN HANDS

People should leave the Government free to administer law and not take it into their own hands, said Mahatma Gandhi in his post-prayer speech on Saturday.

Gandhiji referred to the days in 1915 when he lived under the late Principal Rudra's roof. He was as staunch a Christian as he was a son of India. It was he who brought Gandhiji into contact with the late Hakim Ajmal Khan and Dr Ansari, both of whom looked upon Hindus, Muslims and other Indians with even affection and regard.

He knew that thousands of Hindus received free treatment from Hakim Saheb. He was without doubt the loved 'vaidya' of Delhi. Were these men to be classed as unworthy? It was a matter of shame that Dr Ansari's daughter, Zohra, and her husband, Dr Shaukatullah Khan, should have to abandon their home and live in a hotel for fear of Hindus and Sikhs.

He was free to confess that he would lose all interest in life, if Muslims who had produced such men could not live with perfect safety in the Union. It was suggested to him that the Muslims were all fifth columnists in the

(Contd. on back page col. 4)

महात्मा गांधी ने शनिवार को प्रार्थना के बाद लोगों से कहा कि कानून के संचालन में सरकार को सहयोग करें और उसे अपने हाथों में न लें।

- द हिन्दुस्तान टाइम्स वीकली
(रविवार, 14 सितम्बर, 1947)

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

" विभाजन की विभीषिका में अपने प्राण गँवाने वाले तथा विस्थापन का दर्द झेलने वाले लाखों भारत वसियों को शत शत नमन !"

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

14 अगस्त